।। ॐ श्री सत्‌नाम साक्षी ।।

समाचारपत्र

प्रेम प्रकाश सन्देश

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का आध्यात्मिक मासिक समाचार पत्र

15 सितम्बर 2019 | वर्ष 12 अंक 5

कुल पृष्ठ 28 वार्षिक शुल्क : ₹ 80/- (भारतवर्ष में), ₹ 800/- (विदेश में), एक प्रति ₹ 7/-

सद्‌गुरु टेऊँराम अमृतवाणी

बड़भागी मनुष्य

बड़भागी मनुष्य ही महात्माओं की पहिचान कर श्रद्धा विश्वास पूर्वक सेवा करके अपना उद्धार करते हैं और मोक्ष की प्राप्ति करते हैं. नहीं तो बहुत से अज्ञानी सत्पुरुषों को देखकर ईर्ष्या में जलते रहते हैं और बिना किसी कारण के दूसरों को सताते रहते हैं. अवतारी ऋषि, मुनियों महात्माओं से कोई विरले विवेकी पुरुष ही जीवित अवस्था में लाभ प्राप्त करते हैं. बहुत से मूढ़ अज्ञानी जीव तो सत्पुरुषों की ज्योति समा जाने पर पश्चाताप करके रोते हुए अपनी निन्दा करते हैं कि हाय! हाय!! हमने अपनी दिव्य विभूतियों से कुछ भी लाभ प्राप्त नहीं किया. जैसे लिखा है-

श्लोक : **पाड़े वेज़ हुयामि, तां मूं मूरि न पुछिया। तिहां पोइ पियामि, मोरेसर अखियुनि में।।**

भावार्थ : मेरे पड़ोस में अच्छे जानकार वैद्य रहते थे. मैं भी बीमार था किन्तु मैं उन डॉक्टरों के यहाँ पहुँच न सका; क्योंकि आँख में मोतियाबिन्द आ गया था. इसलिये मैं उनसे इलाज करा न सका किन्तु जब वे लोग चले गये तो मुझे उन डॉक्टरों की कद्र मालूम हुई. मैं पश्चाताप से रोने लगा.

सिद्धान्त : अज्ञानी जीव भी यही कहता है कि जब ऋषि, हमारे पड़ोस में थे और मैं भी ताप क्लेशों व तृष्णा के रोग से बहुत बीमार था, किन्तु मेरा मन अनेक चिन्ताओं से ग्रसित होने के कारण भटक रहा था, सारा दिन मुझे विश्वास नहीं था. मैं अनात्म, देहाध्यास के अहंकार में अन्धा उन्हें देख न सका. अपने मन के रोग मिटाने के लिये मैं उनसे दवा न ले सका जब वे सत्पुरुष, ब्रह्मलोक अविनाशी वतन को पधारे तब मुझे मालूम हुआ. आज मैं केवल उन्हें याद करके पश्चाताप के आँसू बहा रहा हूँ. इस प्रकार से वे लोग केवल पश्चाताप करके, सत्पुरुषों के मन्दिरों व समाधियों की सेवा करके सांसारिक फल की प्राप्ति करते हैं बाकी मोक्ष से वंचित हो जाते हैं.

(पवित्रतम सद्‌ग्रंथ सद्‌गुरु टेऊँराम जीवन चरितामृत के प्रथम व द्वितीय संयुक्त भाग के पृष्ठ 192-193 से)

आचार्यश्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के जीवन-चरित्रामृत से प्रश्नोत्तरात्मक प्रसंग

जिज्ञासा

सद्गुरु टेऊँराम अमृतवाणी

प्रश्न : इन्द्रियों व मन को अपने वश में कैसे किया जा सकता है?

उत्तर : श्री गुरु महाराज जी बोले हे तात! विवेक, वैराग्य व सत्गुरु देव का आश्रय लेकर.

सर्वप्रथम सत्-असत् का विवेक करके आत्मा को सच्चिदानन्द स्वरूप जाने. दूसरा इस सारे संसार को असत्, नाशवान्, झूठा, दुःख रूप मान कर अपने मन को उपराम करके वैराग्य धारण करें. तीसरा गुरु चरणों में दृढ़ विश्वास रखकर अभ्यास करें. जहाँ पर रुकावट आवे वहाँ पर विनम्रता पूर्वक पूछना चाहिये और आशीर्वाद प्राप्त करना चाहिये.

प्रश्न : जो लोग संसार से भागकर जंगल में रहते हैं एवं परमात्मा का भजन करते हैं वे लोग माया से कैसे छुटकारा प्राप्त करते हैं?

उत्तर : श्री गुरु महाराज जी बोले, वे लोग सांसारिक प्रपंच का त्याग करके आरामी होते हैं. इस प्रपंच का खिटखिटा बड़ा दुःखदायी है, जितना धन परिवार आदि पदार्थ बढ़ता है, उतना ही अधिक फुरना होता है और उससे अशान्ति व विक्षेप बढ़ता ही रहता है. वे लोग संसार के फुरने को छोड़कर अलग होते जाते हैं. जो परम वैरागी जिज्ञासु हैं, वे लोग संसार के अनात्म देहाभिमान को छोड़कर निर्मान होकर सांसारिक बातों का सहारन करते हैं. उन्हें कोई गाली दे या निन्दा करे किन्तु किसी से भी अपना प्रयोजन नहीं रखते हैं. सांसारिक विषय वासनाओं से सदैव डरते रहते हैं. सदैव यही विचार रखते हैं कि माया का कोई पदार्थ हमें आसक्त न करे? इसलिये परमात्मा का आश्रय लेकर भगवान का भजन करके माया से पार हो जाते हैं. जिज्ञासुओं को सदैव माया से डरते रहना चाहिये; क्योंकि यह माया अनेक स्थूल रूप धारण करके भक्ति मार्ग में विघ्न डालती है.

दोहा : हरि माया को त्याग के, सन्त गये बन माहिं।
तो भी यह ना छोड़ती, कब-कब जावत ताहिं।।

जिज्ञासुओं को सदैव इस त्रिगुणात्मिका माया से डरते रहना चाहिये.

दृष्टांत : किसी महापुरुष के वैरागानन्द व विवेकानन्द नामक दो शिष्य थे. एक समय की बात है कि उन दोनों ने तीर्थाटन के लिये गुरुजी से आज्ञा ली और आज्ञा पाकर वहाँ से चल पड़े. चलते-चलते किसी राज नगर के आधा मील बाहर किसी सुन्दर नहर के तट पर आ पहुँचे. वहाँ पर एक विशाल छायादार वृक्ष के नीचे आसन बिछाकर नित्य कर्म तथा पूजा-पाठ किया. इसके पश्चात् विवेकानन्द वैरागानन्द से कहने लगा भैया! आप शहर से मधुकरी कर आओ. वैरागानन्द शहर में गया. इधर पीछे से माया एक महा सुन्दरी अप्सरा का रूप धारण करके विवेकानन्द के पास आकर उसे हाव-भाव के द्वारा रिझाने लगी. विवेकानन्द ने अप्सरा की ओर देखकर सिर नीचे झुका दिया और बड़े जोर से रोने लगा. माया ने विवेकानन्द को प्रसन्न करने के लिये काफी प्रयत्न किये एवं अनेक छल-बल से युक्तियाँ चलायीं, किन्तु वे सब निरर्थक सिद्ध हुईं. विवेकानन्द ने न सिर ही ऊपर उठाया और न रोना ही बन्द किया.

कुछ समय के पश्चात् वैरागानन्द शहर से मधुकरी कर वापिस लौट रहा था कि माया ने दूर से ही उसे आते हुए देख लिया और तुरन्त ही अन्तर्धान हो गयी. वैरागानन्द विवेकानन्द को रोते देखकर उनसे पूछने लगा कि भैया! तुम किसलिए रो रहे हो? क्या कोई आकर बुरा-भला कह गया है, अथवा शरीर में कुछ पीड़ा हो रही है? विवेकानन्द इतना सुनकर और अधिक जोर से रोने लगा. वैरागानन्द प्रेमपूर्वक पूछने लगे, हे प्रिय! क्या तुम्हें किसी ने सताया है? तुम इतना क्यों रो रहे हो?

विवेकानन्द रुद्ध कण्ठ से बोले- भैया! मुझे न तो किसी ने सताया है और न ही शरीर में कोई पीड़ा है. आप

(इससे आगे का वृत्तान्त पृष्ठ 27 पर पढ़ें)

ॐ सत्नाम साक्षी
श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का आध्यात्मिक मुखपत्र

प्रेम प्रकाश सन्देश

15 सितम्बर 2019

वर्ष 12 अंक 5

मंगल आशीष

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज
सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज
सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज
सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज

संस्थापक

सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज

संरक्षक–मार्गदर्शक–प्रेरणास्रोत

सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज

सदस्यता शुल्क

अवधि	भारत में	विदेश में
एक वर्ष के लिये	₹ 80	₹ 800
दो वर्ष के लिये	₹ 160	₹ 1600

मनीआर्डर भेजने व पत्र व्यवहार के लिये पता :
व्यवस्थापक, प्रेम प्रकाश सन्देश
प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ,
लश्कर, ग्वालियर-474001 18 (मध्यप्रदेश)
फोन 0751-4045144
सम्पर्क समय प्रात 8 से 10 व सायं 4 से 7 बजे तक
e-mail : premprakashsandesh@gmail.com

Bank Facility

आईडीबीआई बैंक में आप कोर सुविधा/मनी ट्रांसफर के माध्यम से भी निम्न खाते में शुल्क जमा कराके फोन पर सूचना दे सकते हैं

A/c 92610010000468
Net Bankig : IFSC: IBKL0000545
Editor Prem Prakash Sandesh, Gwalior

नई सदस्यता अथवा नवीनीकरण के लिये सदस्यता शुल्क आप मनीआर्डर/कोर बैंक माध्यम के अलावा सद्गुरु महाराज जी की यात्रा के समय बुक स्टॉल पर व देश भर के विभिन्न शहरों में हमारे प्रतिनिधियों के पास जमा कर सकते हैं. इसके अलावा परम पावन गुरू धाम श्री अमरापुर दरबार (डिब्बू), जयपुर के श्री अमरापुर सत्साहित्य केन्द्र में प्रतिदिन एवं रविवार प्रातः 8 से 12 व प्रत्येक गुरुवार-शनिवार सायं 5 से 8 बजे तक श्री कुमार चन्दनानी, श्री नारायणदास रामचंदानी, श्री निहालचंद तेजनानी व श्री अशोक कुमार पुरसानी के पास जमा किया जा सकता है.

माटी की गंध

कवित्त

सिमट गई दुनियाँ सारी इंसान ने उन्नति करी अपूर्व
छोटी सी छलाँग नभ में और हर कोना है पग भर दूर
अन्तरिक्ष को भेद यान ग्रह नक्षत्रों तक पहुँच रहे
मंगल और चंद्र पर जाकर बसेंगे मन में सोच रहे
हाथ में हो मोबाइल तो बस मुट्ठी में है जग सारा
सर्व ज्ञान के ज्ञाता गूगल हुईं पुस्तकें नाकारा
विडम्बना है कैसी जिनको है सारी दुनिया का ज्ञान
पास पड़ोसी से उनकी अब तक न हुई है तनिक पहचान
गगन चूमते फ्लैट्स में कोई कहाँ भला अपना सा है
संग बतियाना हँसी ठिठोली भूला हुआ सपना सा है
हाय हैल्लो तक सीमित जीवन क्यों मशीन सा कर बैठे
बच्चे तक मोबाइल से चिपके संध्या भर घर बैठे
आओ तुमको पुकारती है धरती हरी भरी ये घास
गिल्ली डंडा सतोलिया के पत्थर कितने पड़े उदास
चटक चाँदनी बुला रही है कहती खिली सुनहरी धूप
सोच रहे कितने ऊँचे हो पर बन रहे कूप मंडूक
ए सी से निकलो कहती है महकी हुई हवायें सर्द
आस पास कौन रहते हैं बाँटो तो उनके दुःख-दर्द
अनजानों को निःस्वार्थ भाव से जितना तुम अपनाओगे
स्नेह प्रेम की बहेगी धारा सबको अपना पाओगे
दिखावटी भौतिकता में अपना अस्तित्व नहीं खोना
अम्बर बाँहों में लेना पर माटी से दूर नहीं होना

–सुधा जौहरी, जयपुर

अनुक्रम विषय	पृष्ठ
1. बड़भागी मनुष्य (सद्गुरु टेऊँराम अमृतवाणी) (आवरण मुखपृष्ठ)	1
2. जिज्ञासा (सद्गुरु टेऊँराम अमृतवाणी)	2
3. ब्रह्मर्षि सतगुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज	4
4. गुरु-गंगा-सत्संग-सेवा-सादगी (सत्गुरु महाराज जी की जीवन वाटिका के पाँच पुष्प)	7
5. सद्गुरु सर्वानन्द महिमा भजन	10
6. सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द महिमा (भजन-कवित्त-दोहे)	11
7. मन को स्वस्थ कैसे रखें (आलेख)	12
8. चार दिनों का मेला जग में.... (कवित्त)	13
9. भगत पुण्डरीक की कथा (भागवत चिन्तन)	14
10. आखिर वह क्या है?	15
11. चिकना घड़ा (कहानी)	17
12. चैन्नई + श्री रामेश्वरम् धाम वार्षिकोत्सव की सूचना	19
13. माँ दुर्गा के नौ दिव्य स्वरूपों के आशीर्वाद + नसीराबाद आश्रम मेला सूचना	20
14. माँ के नौ रूपों से औषधियों रूपी आशीर्वाद + भजन	21
15. पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज संत मण्डली का देशाटन (यात्रा-दर्शन)	22
16. प्रेम प्रकाश आश्रम ब्यावर का वार्षिकोत्सव एवं केकड़ी में दिव्य सत्संग समारोह सूचना	22
17. शोक-समाचार	23
18. गुरुजनों के उत्सव मनाये गये (समाचार), अहमदाबाद में रक्तदान शिविर	24
19. वर्ग पहेली-184, 183 के सही हल, सही उत्तर भेजने वालों के नाम	25
20. सद्गुरु सर्वानन्द जन्मोत्सव सूचना	25
21. पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज संत मण्डली का यात्रा-कार्यक्रम	26
22. व्रत-पर्व-उत्सव, + जिज्ञासा, पृष्ठ 2 आवरण का शेष	27
23. ब्रह्म दर्शनी (सिंधीअ में समुझाणी)	28

123वें अवतरण दिवस 12 अक्टूबर पर विशेष

ब्रह्मर्षि सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज

(सत्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज)

परम श्रद्धेय प्रातः स्मरणीय ब्रह्मर्षि सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का इस धराधाम पर अवतरण सम्वत् १९५४ के आश्विन मास की चतुर्दशी (सिन्धी असू की तारीख १२) गुरुवार के शुभ मंगलमय दिन, सिन्ध देश के सिन्धु दरिया के समीप स्थित भिट्टशाह नामक एक छोटे से गाँव में कीर्तिमान पिता भक्तवर श्री सेवकराम एवं यशस्विनी माता श्रीमती ईश्वरीदेवी के घर आँगन में हुआ. ब्राह्मणों को बुलवाकर नवजात शिशु का नामकरण संस्कार किया गया. ब्राह्मणों ने बालक का नाम 'सीरू' रखकर सबको बधाई दी और स्वागत- सत्कार भेंट पाकर अपने घर गये.

आचार्य सद्गुरु श्री स्वामी टेऊँराम जी महाराज, जो कि उस वक्त दस वर्ष के थे, ने बालक को कृपादृष्टि से देखा और अपनी गोद में उठाकर उसका सिर चूमा तथा सिर पर अपना कर कमल फेरा. इससे बालक परम भाग्यशाली हुआ. स्वामी जी के दोनों कुल भक्ति परायण थे, इसलिये स्वामी जी पर बचपन से ही भक्ति का प्रभाव पड़ा. पिता एवं नाना के घर रोज सत्संग होता था. इसलिये सहजता में ही स्वामी जी को सत्संग सुनने का सौभाग्य प्राप्त होता था. स्वामीजी बड़ी लगन से ध्यानपूर्वक सुनते थे और संतों के आचरण भी देखते थे. सत्संग द्वारा स्वामी जी को व्यवहार एवं परमार्थ का पर्याप्त ज्ञान हो गया. अब उन्हें सत्गुरु धारण करने की स्वयं इच्छा बलवती हुई. सत्गुरु की खोज करने के लिये उन्हें कहीं दूर जाना नहीं पड़ा; क्योंकि उनके मामा जी आचार्य श्री श्री १००८ सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज, जो कि श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के आचार्य थे और सर्व सद्गुणों की खान थे. इसलिये स्वामी जी ने आचार्य जी को गुरु करने का निश्चय कर लिया.

निकट सम्बन्ध होने के कारण स्वामी जी अपने मामा के घर खण्डू गाँव में जाते रहते थे. इस बार वे जीवन की अत्युत्तम इच्छा को लेकर खण्डू आये. आचार्य जी भी स्वामी जी के मनोगत विचारों को जान गये और कठोर से कठोर परीक्षा लेने की सोचकर आचार्य जी स्वामी जी को दुबारा आने की आज्ञा देकर स्वयं कहीं चले गये. मन की इच्छा को दबाकर स्वामी जी अपने घर भिट्टशाह लौट आये. लेकिन बढ़ती हुई तीव्र इच्छा ने उन्हें चैन से रहने नहीं दिया. कई बार उन्हें खाली लौटना पड़ा फिर भी स्वामी जी हताश नहीं हुए. अंत में उनकी श्रद्धायुक्त सच्ची भक्ति ने निराशा को आशा में बदल दिया और एक दिन आचार्य जी ने सीरू को बुलाकर गुरु मंत्र से दीक्षित किया और उनका नाम बदलकर सर्वानन्द रखा और पूछा कि क्या तुम्हारी इच्छा पूरी हुई? स्वामी जी ने हाथ जोड़कर कहा कि जी, गुरुदेव! यह सुनकर आचार्य जी कहने लगे कि केवल दीक्षा ही जीवन की सफलता नहीं है परन्तु शिक्षा का होना भी बहुत जरूरी है. ऐसा कहकर आचार्य जी ने उन्हें शिक्षा दी. जो-जो शिक्षा आचार्य जी ने उन्हें दी, उनका वे जीवन भर पालन करते रहे. संक्षेप में आचार्य जी की पवित्र वाणी में शिक्षाएँ इस प्रकार हैं-

।। भजन राग पहाड़ी ।।

टेक : **सद्गुरु बोले सुन रे चेला,**
साधु कहावन सुगम नहीं है साधन काम दुहेला।।

1. सेवा स्मरण निशदिन करना, काटन भुख का वेला।
तांते समझी पाँव सु धरना, आतप शीत सहेला।।
2. लोक निन्दा को सिर पर सहना, जग में चरन अभेला।
तीन लज्जा को तोड़के चलना, भव ते रहन अकेला।।
3. पाँच विषय की आस न करनी, इन्द्रियां जीत रहेला।
अन्तर आतम चिन्तन करना, है यह अद्भुत खेला।।
4. कहता टेऊँ कठिन फकीरी, यह ना गैल सुहेला।
जीव ईश की कटे उपाधी, करन ब्रह्म से मेला।।

1. सेवा करना, 2. स्मरण करना, 3. उपवास करना, 4. सुख-दुःख सहन करना, 5. लोक निन्दा को सहन करना, 6. तीन लज्जाओं को तोड़ना, 7.

निर्भय रहना, 8. पाँच विषय को जीतना, 9. इन्द्रियों को वश में रखना, 10. आत्म चिन्तन करना, 11. जीव ईश का भेद मिटाना, 12. एकान्तवास करना, इत्यादि.

आचार्य जी स्वामी जी से कहने लगे कि जब तक तुम्हारे शरीर में प्राण हैं- (1) सेवा करते रहना, (2) स्मरण करते रहना. सिंध के टण्डेआदम शहर में स्थित अमरापुर दरबार (डिब्) पर होने वाली सेवा का तो हमने केवल नाम सुना है, पर यहाँ भारत में राजस्थान के जयपुर नगर में अमरापुर स्थान की तो मुझे पूरी याद है कि सुबह से लेकर शाम तक स्वामी जी सेवा में लगे रहते थे. मिट्टी पत्थर उठाने तक की सेवा में भी वे नहीं चूकते थे. स्वामी गुरुमुखदास जी जो कि अवधूत व एक सच्चे संत थे, भी रात-दिन सेवा में लगे रहते थे. स्वामी जी ने स्मरण को तो अपने जीवन का अंग ही बना लिया था. प्रभात के चौथे प्रहर में जागकर गुरुमंत्र के स्मरण में लग जाते थे. साथ में यह भी स्मरण रखते थे कि गुरुदेव ने क्या-क्या शिक्षाएँ दी हैं. तपस्वी जीवन था. बहुत करके ऋषिकेश की गहन झाड़ियों में रहते थे. उस समय ऋषिकेश में अन्नक्षेत्र नहीं हुआ करते थे. स्वामी जी ऋषिकेश से भोजन के लिये प्रत्येक शनिवार को प्रायः हरिद्वार पैदल आते. हरिद्वार में रात्रि विश्राम कर रविवार अन्नक्षेत्र से भोजन लेकर वापस ऋषिकेश झाड़ियों में आते और अगले शनिवार तक प्रतिदिन एक रोटी निकालकर गंगाजल का छींटा लगाकर खाते. इस प्रकार स्वामी जी में कठोर तपवृत्ति थी.

परम पूज्य गुरुदेव के द्वारा दी गई सब शिक्षाओं को स्वामी जी ने अपने जीवन में पूरा-पूरा उतारा. जैसे-जैसे आचरण आचार्य जी महाराज करते थे वैसे ही स्वामी जी ने किये. सब कुछ होते हुए भी सादा भोजन पंगति में बैठकर करते थे, सादे कपड़े पहनते थे. रहन-सहन, चाल-चलन सब कुछ सीधा-सादा था.

छल-स्वार्थ रहित मीठी वाणी बोलते थे. जो कुछ मन में होता था, वह सत्संग में सुनाते थे. जो कुछ सुनाते थे वैसा वे स्वयं करते थे. स्वामी जी के सत्संग में किसी को भी समय का ध्यान नहीं रहता था. सब आनन्द विभोर होकर मस्ती में मस्त हो जाते थे, लेकिन स्वयं स्वामी जी समय के बड़े पाबन्द रहते थे. स्वामी जी सत्संग में कर्म, धर्म, ज्ञान, भक्ति, प्रेम आदि सभी विषय खोल-खोलकर समझाते थे. और प्रत्येक शनिवार को अपने गुरुदेव की महिमा का गान करते थे, उसी दिन उपवास व मौन व्रत भी उनके जीवन का अंग थे.

शिष्य बनने की इच्छा रखकर आने वाले लोगों में से विशेष कर माताओं, बहनों से ये पूछते थे कि आप अपने घर वाले बड़ों से आज्ञा लेकर आयी हो? अगर नहीं तो आज्ञा लेकर आओ. और यह भी पूछते थे कि आपको गुरु करने की खुद इच्छा हुई है या किसी और ने आपको कहा है? अगर कोई कहता था कि मुझे किसी ने कहा है तो स्वामी जी उसे एकांत में बुलाकर समझाते थे कि आज तुमने किसी के कहने पर मुझे गुरु बनाना चाहा है, ये विचार तो आपके अच्छे हैं, पर तुम्हारा अपना विचार नहीं है. कल फिर किसी दूसरे के कहने पर आप फिर किसी दूसरे को गुरु बना लोगे. ऐसा करने से तुम्हें सुख- शान्ति नहीं मिलेगी. इसलिये आप अपनी बुद्धि से सोच-समझकर एक निश्चय करके गुरु धारण करें. यह कोई मिठाई नहीं है जो जल्दी से खा लोगे. शिष्य बनना कोई खेल नहीं है. जो कोई भी अपने गुरु को छोड़कर दूसरा गुरु धारण करता है. वह सौ जन्म कुत्ते के पाकर फिर चाण्डाल के घर जन्म लेता है. शिष्यों को धर्म मर्यादा सिखाकर फिर शिष्य बनाते थे. वे गुरु शिष्य के गहन तत्त्व को अच्छी तरह जानते थे.

स्वामी जी के विचार महान् थे वे हर बात का गहरा अध्ययन करते थे; क्योंकि गुरुदेव ने सिखाया था-

'आदि फल विचार के तुम कर पीछे सब काम जी'

मनुष्य के बुद्धि की पराकाष्ठा भी यही है कि हर कार्य का आगा पीछा सोच-समझकर आरम्भ करे और उसे अंत तक निभाये.

आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की तरह स्वामी जी भी किसी से कभी पैसा या कोई चीज माँगते नहीं थे, न ही इशारा करते थे. सिंध की बात है आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के ब्रह्मलोक पधारने पर स्वामी जी ने कार्यभार सम्भाला. कुछ समय के बाद चैत्र मेले की तैयारियाँ होने लगीं. जिज्ञासु प्रेमी लोग भी आने लगे. कराची से श्री प्रभदास हिंगोरानी

भी परिवार सहित आये. उस समय भण्डार कोठार की सेवा पर संत चन्दनप्रकाश जी थे. प्रभदास हिंगोरानी व उनके बच्चे पहले से ही स्वामी चन्दनप्रकाश जी से परिचित थे. बच्चे पहली बार मेले में आये थे. बच्चों का स्वभाव है देखना व पूछना. सो हिंगोरानी के बच्चे जिनमें रतन, इन्द्र, जसोदा, मोहिनी और मनू थे. वे सब स्वामी चन्दनप्रकाश जी से पूछने लगे कि मेले में जो इतने लोग आये हैं, उनके खाने के लिये जो भण्डार है, वह हमें दिखाईये. स्वामी चन्दनप्रकाश जी ने उन बच्चों को वह भण्डार दिखाया जहाँ खाने का सामान रखा था. एक बोरी चावल, १५-२० सेर आलू, एक बोरी आटा एवं मन भर प्याज था. ये भण्डार का सामान देखकर बच्चे हँसकर पूछने लगे कि इतना बड़ा मेला और सामान तो बिल्कुल नहीं है, कल ये लोग क्या खायेंगे. स्वामी चन्दनप्रकाश जी ने कहा कि मेरे पास जो था वह दिखा दिया, आगे गुरु महाराज जी जानें. बच्चे फिर अपने पिता के साथ दरबार में घूमने लगे. थोड़ी देर में एक सेवादारी दौड़ता हुआ प्रभदास जी के पास आया और कहने लगा आज रात के भोजन की व्यवस्था तो हो गयी, बाकी कल सवेरे बच्चों के लिये एक देग खिचड़ी बनेगी, इतने चावल हैं और कुछ भी नहीं है. सेवादारी सूचना देकर चला गया. इधर प्रभदास जी स्वामी जी के पास आये बच्चे भी उनके साथ थे. और भोजन के बारे में सब बात सुनाकर कहने लगे कि कल शहर के सेठ लोग जो आपके पास बैठे थे, वे सेवा के लिये आज्ञा माँग रहे थे. आप उन्हें बुलाकर मेले के लिये भोजन व्यवस्था करा लीजिये. यह सुनकर स्वामी जी बिना किसी घबराहट के प्रभदास जी से कहने लगे कि सेठों से कहने की जरूरत नहीं है. मैं अपने गुरुदेव को ही, जो सबसे बड़ा सेठ है, प्रार्थना करूँगा. मेला भी उनका है मेहमान भी उनके हैं. अगर उन्होंने मेले के लिये आज रात भर में भोजन की व्यवस्था कर दी तो ठीक है नहीं तो मैं और आप दोनों भाग चलेंगे. गुरू जाने और गुरू का मेला! ये वचन सुनकर प्रभदास जी अवाक् रह गये. फिर प्रभदास जी अपने काम में लग गये. रात होने लगी, बच्चों को तमाशा लग रहा था. वे आपस में कह रहे थे कि हम भी देखें कि कैसे स्वामी टेऊँराम जी महाराज भोजन भेजते हैं और अगर नहीं भेजा तो पिताजी और स्वामी जी कैसे और कहाँ भागते हैं. यह सोचकर सब बच्चे बाहर वाले दरवाजे पर आकर बैठ गये. रात बीतने लगी, बच्चों को नींद तो सता रही थी फिर भी तमाशा देखने के लिये जैसे तैसे करके जाग रहे थे. आधी रात को अचानक एक ट्रक शहर से आकर दरवाजे पर खड़ा हो गया और ड्राइवर '**भगत टेऊँराम- भगत टेऊँराम**' कहकर पुकारने लगा. आवाज सुनकर बच्चे ट्रक के पास दौड़ गये. और पूछने लगे कि माल किसने भेजा है? ड्राइवर कहने लगा कि 'भगत टेऊँराम' ने भेजा है, 'भगत टेऊँराम' को बुलाओ तो सामान सम्भाल ले. यह सुनकर बच्चे पिताजी के पास दौड़ गये. समाचार पाकर प्रभदास जी ने वहाँ जाकर सामान उतरवाकर भंडार में रखवा दिया. सबेरे सारा समाचार स्वामी जी को बताकर चरणों में सिर रखकर कहा कि आपकी गुरु-भक्ति धन्य है.

सन् १९६२ में जयपुर दरबार की बात है. एक प्रेमी जिसका नाम लालचंद आडवाणी था. उसे मोहनलाल भी कहते थे. अब उसका शरीर शान्त हो गया है, वह हांगकांग से अपना धन्धा बंद करके भारत आया था, पूना में उसका घर है. स्वामी जी के दर्शन के लिये वह पूना से जयपुर आया. वापिस जाते समय उसने ५८,००० (अट्ठावन हजार) रुपये का ड्राफ्ट स्वामी जी के चरणों में भेंट रखा. कागज देखकर स्वामी जी ने पूछा कि यह क्या है? लालचन्द कहने लगा- गुरुदेव! यह ५८ हजार रुपये का ड्राफ्ट है, आप इस भेंट को स्वीकार करें. यह सुनकर स्वामी जी ने कहा कि क्या आपका परिवार है? लालचन्द जी ने कहा कि हाँ, गुरुदेव! तो फिर ये रुपये ले जाइये और अपने परिवार का पालन-पोषण करिये. बहुत प्रार्थना करने पर भी स्वामी जी ने वह भेंट स्वीकार नहीं की. ऐसा था स्वामी जी का त्यागमय जीवन!

स्वामी जी सगे, धागे, रक्षा, ताबीज इत्यादि जिस किसी प्रेमी के गले या बाँह में बन्धे देखते थे, उसे तुड़वाकर कहते थे कि राम नाम का सच्चा धागा बाँधो. हस्त रेखाएँ न देखते थे और माता बहनों को कहते थे कि दूर से ही मनोमय प्रणाम करो.

स्वामी जी अपने आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज को ही अपना इष्ट मानते थे तथा भगवान से भी बढ़कर गुरुदेव की पूजा करते थे.

"बोलो गुरुभक्त सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की जय"

सत्गुरु सर्वानन्द जन्मोत्सव 8 से 12 अक्टूबर 2019

गुरु-गंगा-सत्संग-सेवा-सादगी

सत्गुरु महाराज की जीवन वाटिका के पाँच पुष्प

(श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज)

पाँच विषय तज पाँच से- पूरी कीनी प्रीत।
प्रथम गुरू, गंगा द्वितीय- तीजा सत्संग नीत।।
चतुर्थ सेवा प्रेम से- सादा जीवन पाँच।
पंच सेव पूरण भए- लगी न माया आँच।।

महापुरुषों की जीवन वाटिका में अनन्त गुणों रूपी पुष्प खिलते हैं. उन पुष्पों की सुगंध से केवल उनकी जीवन वाटिका ही सुगंधित नहीं होती, लेकिन वह दिव्य खुशबू दिग- दिगान्तरों को भेदते हुए त्रिलोक में व्याप्त हो जाती है. उस सुगंध से खिंचे कई जिज्ञासु भंवरे सांसारिक वैभव का परित्याग करके अपना सर्वस्व लुटाने को बेताब होकर उन दिव्य पराग कणों से सुगंध का एकाध झोंका उठाने को तत्पर रहते हैं- उस दिव्य उपवन से टकराकर बहने वाली हवाएँ भी दिव्य संदेश देती हैं-

कह टेऊँ उते बाग बहारा, जहिं जा अचनि था मूं हुबकारा,
अमां से न विसिरनि गुल,
माता डे खुश्यां मोकल, जे झलीं त बि वेन्दुस ओडाहुं।

त्याग तप और सादगी की मूर्ति सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की जीवन वाटिका में अनन्त गुणों रूपी पुष्प थे- उनमें से उपरोक्त पाँच पुष्पों का यत्किचिंत वर्णन यहाँ प्रस्तुत है-

1. गुरुभक्ति :

पूरन आतम ज्ञान दे, काटे जो दुःख द्वन्द्व।
ऐसे गुरु को करत हूँ, कह टेऊँ नित वन्द।।

सदाईं कुर्बान, वञां तहिंजे नावं सां,
जहीं पियारे प्रेम रसु, डिनो आतम ज्ञान,
रहियो न रत्तीअ जेतिरो, अन्दर में अभिमानु,
सामी सभु जहानु, जागी डिठो जोति में।

साधारणतः सभी साधक गुरु में भक्ति भाव रखते हैं, बिना गुरु भक्ति के शिष्य का कल्याण होने वाला नहीं-

ईश्वर ते गुरु में अधिक, धारे भक्ति सुजान।
बिन गुरु भक्ति प्रवीन हू, लहे न आतम ज्ञान।।

लेकिन सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज जैसी एकनिष्ठ-परिपक्व तथा पूर्ण समर्पण से युक्त **"गुरु-भक्ति"** विरले ही देखने को मिलती है. अपने व्यावहारिक एवं पारमार्थिक जीवन की स्वतंत्र रूप से कल्पना तक उनके मन में नहीं थी. साधारण से साधारण लौकिक कार्य एवं आत्मिक उन्नति के दुस्तर पथ पर अनवरत आगे बढ़ने की प्रक्रिया उन्हें गुरु-कृपा के प्रज्ज्वलित दीप के प्रकाश में ही होती दिखाई पड़ती थी. उनका जीवन चरित्र ऐसी अगणित घटनाओं से भरा हुआ है जिन घटनाओं से उनके जीवन के हर पल एवं हर कदम पर गुरु-कृपा का पावन सानिध्य दृष्टिगोचर होता है.

सत्गुरु के पंचभौतिक देह के रहते हुए जैसे वे उनकी आज्ञा का पालन करने को तत्पर रहते थे, वैसे ही उनके ब्रह्मलीन होने के उपरांत भी कोई भी कार्य वे उनकी आज्ञा के बिना नहीं करते थे, अब सत्गुरु के निर्गुण रूप से ऐसा निरंतर सानिध्य सरलता से प्राप्त होने वाला नहीं. जैसे भगवान राम के चौदह वर्ष वन में जाने के उपरांत भरत केवल उनकी पादुका का सम्बल लेकर राज्य कार्य चलाने लगे, कोई भी कार्य बिना पादुका से पूछे नहीं करते-

नित पूजत प्रभु पांवरी, प्रीत न हृदय समात।
पूछ पूछ आज्ञा करत, राज काज बहु भांत।।

तो जिस अटल राम-भक्ति का आश्रय लेकर भरत जी प्रभु की पादुकाओं से वार्तालाप का सम्बन्ध स्थापित कर लेते हैं ऐसे ही निश्चल और पूर्ण गुरु-भक्ति

का आश्रय सत्गुरु सर्वानन्द जी महाराज ने लिया एवं अपने हृदय कमल में विराजमान आचार्य सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज से आज्ञा लेकर ही वे अपने जीवन में समस्त कार्यों को करते थे.

एक गुरू की ओट ली, एक गुरू आधार।
एक भाव से भक्ति कर, हो गये भव से पार।।
तुम लग मेरो आसरो, तुम लग मेरी दौड़।
जैसे काग जहाज पर, सूझत ठौर न और।।
चारों तरफे पानी पानी, सूझत काहू नाहिं किनारा।
सतगुर टेऊँराम के बिन, और न कोई मुझे आधारा।।

प्रत्येक शनिवार को मौन व्रत रखकर सत्संग में सद्गुरु महाराज जी की महिमा का गुणगान करते थे और आचार्य श्री सद्गुरु महाराज जी द्वारा रचित श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ की वाणी का संकलन, प्रकाशन और प्रचार उन्होंने किया. सत्गुरु महाराज की पावन परम्पराओं को आगे बढ़ाते हुए अमरापुर दरबार की जयपुर में स्थापना की, जहाँ पूज्य सद्गुरु महाराज जी का श्रीविग्रह तथा समाधि स्थल स्थित हैं एवं उन्हीं के द्वारा स्थापित चैत्र मेला की परम्परा को अक्षुण्ण बनाए रखा. देश विभाजन के पश्चात् जैसी परिस्थितियाँ थीं, उनको देखते हुए ये सब कार्य उन्होंने अपनी तपस्या, लगन एवं कर्मठता के साथ पूर्ण किये, लेकिन अपने आपको केवल निमित्त मात्र माना, उससे आगे कुछ नहीं, वे सदैव कहा करते थे कि यह जो अद्भुत दृश्य आप देख रहे हैं और जो कुछ भी कार्य सम्पन्न हो रहे हैं, सब सद्गुरु महाराज जी की लीला है. सभी कार्य वे स्वयं उपस्थित होकर कर रहे हैं- हम में कुछ भी शक्ति नहीं-

भारी उपकारी, सामी मिल्यो सतगुरू,
अविद्या कोट जन्म जी, खिन में निवारी,
सूरत सुपेर्युनि जी, घट घट डेखारी,
आतम खूमारी, चढ़ी वेई चित्त ते।

।। भजन ।।

तर्ज : **साबरमती के सन्त तूने कर दिया कमाल।**

टेक : **भक्ती कई सत्गुर जी त कई स्वामी सर्वानन्द।**
सेवा कई सत्गुर जी त कई स्वामी सर्वानन्द।।

1. कलियुग जो कहर मुल्क में बारणु जड़ी बारियो,
दुख दर्द मां दाहू करे प्रेमिनि हो पुकारियो।
सिन्धुड़ीअ जे नन्डिड़े गोठ में गुरुदेव पधारियो,
भिट्टशाह सुन्दर गांव में जहिं जनमु हो धारियो।
सवली कई प्रेमिन जीं त कई स्वामी सर्वानन्द,
सेवा कई सत्गुर जी त कई स्वामी सर्वानन्द।।

2. नन्ढपिण खां राम नाम जो पीतो हो प्यालो,
तृष्णा खे करे तर्कु कयो अन्दरु उजालो।
संसार में रही बि रह्यो सभखां निरालो,
जुहिंदनि सां करे जोगु कयो अमर हो नालो।
सफली कई देही त कई स्वामी सर्वानन्द,
सेवा कई सत्गुर जी त कई स्वामी सर्वानन्द।।

3. सत्गुर जी वठी शरण कई प्रेम पढ़ाई,
तन मन जी गुरुअ गोद में जहिं भेंट चढ़ाई।
निष्कामु थी निर्मानु सभ मां सारु खयाईं,
गुरुदेव सन्दे हुकम जी-तामील कयाईं।
आज्ञा मञी सत्गुर जी त मञी स्वामी सर्वानन्द,
सेवा कई सत्गुर जी त कई स्वामी सर्वानन्द।।

4. गुरु ब्रह्मा गुरू विष्णु महादेव आ गुरू,
संसार में सभिनी खां वडो देवु आ गुरू।
माया जो कटे जारु करे पारि थो गुरू,
शरनागतनि जीं सिक सां लहे सार थो गुरू।
अहिड़ी अटूट श्रद्धा रखी स्वामी सर्वानन्द,
सेवा कई सत्गुर जी त कई स्वामी सर्वानन्द।।

2. गंगा मैया : परमार्थ पथ के साधकों को गंगा मैया का पावन तट सदा से आकर्षित करता रहा है. जिज्ञासु को जिस आध्यात्मिक वातावरण एवं एकांत की आवश्यकता होती है- वह सहज ही गंगा मैया के पावन तट पर प्राप्त हो जाता है. सत्गुरु महाराज जी भी छोटी अवस्था से ही गंगा मैया के पावन तट पर ऋषिकेश की झाड़ियों में रहकर अत्यंत अल्पाहार करते हुए अपने तन मन को साधते थे. सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज से आज्ञा लेकर प्रत्येक

वर्ष कुछ महीनों के लिए वहाँ एकांत सेवन करते थे. उनकी गुरुदेवसे यही प्रार्थना रहती थी-

।। भजन ।।

सतगुरु स्वामी सिरजण हारा।
देवो प्रभु मुझे गंगा किनारा।।

1. **संतों का संग होवे- कथा प्रसंग होवे,**
मन में उमंग होवे- चिन्ता परिहारा।
2. **रहने को झाड़ी होवे- आगे फुलवाड़ी होवे,**
चन्द्र उज्यारी होवे- गिरि का नजारा।
3. **महा एकांती होवे- मन में शान्ति होवे,**
सुमरन जाती होवे- ओम उच्चारा।
4. **माँगे ये दास तेरा- करो जी हृदय डेरा,**
कहे टेऊँ काटो मेरा- जम का जारा।।

सत्गुरु महाराज जी गुरु गद्दी के उत्तरदायित्वों का निर्वाह करने के साथ-साथ हर वर्ष कुछ समय के लिए गंगा किनारे एकांत सेवन अवश्य करते थे. उनका ये गंगा मैया से प्रेम यदा-कदा उनकी वाणी द्वारा भी प्रकट होता था. वे कहा करते थे कि मेरी तो सद्गुरु महाराज से यही प्रार्थना है कि मुझे गंगा का किनारा प्राप्त हो जाय-

चादंनी की यामिनी में चमक रहे तारा,
सुरसरि तट नाम जपूं- चलत ठंडी धारा।
सुनिए दीनानाथ जी अर्ज ये हमारा,
अभय दान दीजिए अरु गंगा का किनारा।।

वे कहते थे कि गंगा किनारे के मच्छर भी मुझे प्रिय हैं-

दोहा : **मच्छर गंगा तीर के, फिर फिर मारे डंक।**
सो न अरे उठ राम भज, त्यागे निद्रा अंक।।
या तो ये मच्छर भले, सूता लेहिं जगाय।
सर्वानन्द भी ताहिं पर, बार बार बलि जाय।।

अपने अंतिम इच्छा-पत्र में भी उन्होंने लिख दिया कि इस पँचभौतिक देह को गंगा मैया जी को समर्पित कर दिया जाय, उनकी पावन इच्छा के अनुसार हरिद्वार गंगा किनारे १० नम्बर घाट पर उनकी पार्थिव देह को गंगाजी को समर्पित कर दिया गया, जहाँ आज **"स्वामी सर्वानन्द स्मृति स्थल"** बना हुआ है.

3. सत्संग : नित्य प्रति नियम से सत्संग में बैठना एवं जिज्ञासुओं को सदुपदेश सुनाना यह उनके जीवन का अभिन्न अंग था. कहीं भी देश-विदेश में उनका जाना होता था वहाँ नित्य प्रति सत्संग का कार्यक्रम होता था. जीवन के अंतिम प्रहर में जब शारीरिक अस्वस्थतावश चिकित्सकों ने सत्संग करने से मना किया तब कहने लगे कि हमें चाहे भोजन न प्राप्त हो लेकिन सत्संग में जाकर सत्संग सुनने सुनाने का नियम यथा संभव निभाना है. गुरु के नाम व गुरु की महिमा का प्रसार करना वे अपना प्रथम कर्तव्य समझते थे. **वे सभी को उपदेश देते थे कि जहाँ भी रहें जैसी अवस्था में रहें सत्संग अवश्य करते रहें. चाण्डाल का सत्संग होता हो तो वहाँ जाने में भी कोई बुराई नहीं. सत्संग मन की औषधि है.** यह मन विषधर सर्प के समान है. गुरु की कृपा से इसके विष दंत तो नष्ट हो जाते हैं लेकिन फिर भी संसार के विषय विकारों की हवा से कहीं ये दंत फिर से उत्पन्न न हो जाय इसलिए सत्संग रूपी टोकरी में इस मन को बंद रखना चाहिए. जैसे सपेरे सर्पों को, जिनके विष दंत निकाले गये होते हैं, उन्हें भी टोकरी में बंद रखते हैं इसी प्रकार मन को सत्संग रूपी किले में बंद रखना चाहिए.

हिंकु कोट अंदरि रहिजाइ, धनु चोरु फुरे ना को,
सब सख्तियूं सहिजाइ

4. सेवा : बचपन से ही सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की शरण में खण्डू गाँव करीब प्रत्येक माह जाते थे वहाँ हर माह मेला लगता था, मेले में जाकर सेवा किया करते थे. खण्डू में सत्संग हेतु चबूतरे का निर्माण कार्य किया गया एवं उसके बाद आचार्य जी जब टण्डाआदम आये तो वहाँ पर साधनों का अभाव था. सभी संत सारा दिन अथक परिश्रम करके ऊबड़- खाबड़ जंगल और रेत के ढेरों को समतल करते थे. ग्रीष्म की तपती दुपहरी हो या शीत लहर चल रही हो सभी संतों के साथ मिलकर कठोर शारीरिक श्रम करते थे. विभाजन के पश्चात् जयपुर में अमरापुर स्थान का निर्माण होने लगा तब स्वामी जी स्वयं लाठी लेकर हर सेवा कार्य सब के साथ मिलकर

अपने हाथों से करते थे. शरीर की अवस्था बड़ी हो जाने पर भी चैत्र मेले की तैयारियों में स्वामी जी स्वयं अपने हाथों से कार्य किया करते थे. अपने दैनन्दिन जीवन के कार्य भी स्वयं अपने हाथों से करते थे. सेवा की महानता का सत्संग में भी गान किया करते थे.

5. सादगी : सादगी स्वामी जी के जीवन का अभिन्न अंग थी. बचपन से ही अपने सद्गुरु के जीवन को उन्होंने देखा, जिनके जीवन के हर क्षेत्र में सादगी थी.

भजन : **सुणो सादगी स्वामी टेऊँराम जी**

1. टिन चइन दर्बार्युनि जे हूंदे, महलात माड़िन जे हूंदे
   खबड़ खासु डिठुमि, कन्दो वासु डिठुमि, अभ्यासु डिठुमि
2. केई कीमती कपड़नि जे हूंदे, रेशमी बखमल वाईलनि जे हूंदे
   पाईन्दो खादी डिठमि, वृत्ती सादी डिठमि ऐं समाधी डिठमि

गुरु के जीवन का प्रभाव शिष्य के जीवन पर ऐसा पड़ा कि जब तक उनका शरीर था तब तक सादगी को उन्होंने नहीं छोड़ा. इतनी बड़ी गद्दी के मालिक होते हुए एवं अनेक आश्रमों का अधिपति होते हुए भी सादगी के पथ से विचलित नहीं हुए. जब सब सुख साधन सुविधाओं की सहज प्राप्ति हो फिर भी कोई अपना जीवन सादा ही रखता हो ऐसा होना दुर्लभ है.

एक समय सादा भोजन खाना, धरती पर सोना एवं बिल्कुल सादे खादी के वस्त्र पहनना एवं आवश्यकता से अधिक वस्त्र या पदार्थ न रखना. जहाँ जाते थे देश में या विदेश में अत्यंत सीमित मात्रा में सादे खादी के चोले अपने साथ रखते थे. सब साधन होते हुए भी उन्होंने अपरिग्रह की वृत्ति अपनाई. दिखावे और आडम्बर से वे कोसों दूर थे. अपना नाम प्रसिद्ध करने एवं जय-जयकार सुनने की इच्छा से भी रहित ऐसे वीतरागी महात्मा आज के समय में दुर्लभ हैं.

परम पूज्य गुरुदेव सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के जयंती के पावन पर्व पर हम सब उनके श्रीचरणों में प्रार्थना करें कि हमारा जीवन भी उन महापुरुष जैसा पवित्र व गुणमय हो.

सर्व शिरोमणि संत हैं- देत सदा आनन्द।
किन्तु हमारे मन बसे- सत्गुरु सर्वानन्द।।

सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द महिमा भजन

टेक : **कुदरत का देखो चमत्कार हो गया,**
सारे जगत में जै जै कार हो गया।
सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी का,
धरती पे आज अवतार हो गया।।

1. आई सुहानी देखो आज ये घड़ी,
   बरसे गगन से सुमन की लड़ी।
   सारा चमन गुलजार हो गया,
   धरती पे आज अवतार हो गया।।
2. ईश्वरी माता के है भाग्य का कमाल,
   सेवक राम जी भी हो गये निहाल।
   चन्दा का सबको दीदार हो गया,
   धरती पे आज अवतार हो गया।।
3. खुशियों से झूमे सारा भिट्टशाह गाम,
   जन्में अवध में जैसे कौशल्या के राम।
   घर-घर आनन्द का संचार हो गया,
   धरती पे आज अवतार हो गया।।
4. झूले में झूल रहे स्वामी सर्वानन्द,
   जैसे यशोदा ग्रह झूले ब्रज चंद।
   निर्गुण ब्रह्म साकार हो गया,
   धरती पे आज अवतार हो गया।।
5. दर्शन देने आये स्वामी टेऊँराम,
   गोदी में लेके मुख चूमा सुख धाम।
   आँखों-आँखों में इकरार हो गया,
   धरती पे आज अवतार हो गया।।
6. आया अनोखा दिन आज बेमिसाल,
   सत्गुरु को आये हुए १२३ साल।
   गद्-गद् सारा संसार हो गया,
   धरती पे आज अवतार हो गया।।

-स्वामी मनोहरप्रकाश जी महाराज,
श्री अमरापुर दरबार, जयपुर

सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द महिमा

।। भजन ।।

तर्ज : **देख तेरे संसार की हालत......**

थल : **सत्गुर सर्वानन्द स्वामी आये धर अवतार**
जग में होई जय जयकार।

सिंध देश भिट्टशाह पधारे, दीनबंधू दातार, जग में....।।

1. पिता सेवकराम संतन सेवी, माता जिनकी ईश्वरी देवी।
तिस घर आये सत्गुर मेरे, करने जग उद्धार, जग में....।।

2. बालापन में बन बैरागी, हरिदर्शन की इच्छा जागी
शुकदेव जैसे त्यागी बनकर, छोड़ चले घरबार, जग में....।।

3. गुरु सेवा में अपना जीवन, भक्ति भाव से किया समर्पण।
गुरु भक्ती के पथ पर चलकर, हुआ साक्षात्कार।।

4. दास 'दिलीप' ये महिमा गाए, गाकर अपने भाग बनाये।
ऐसे सत्गुरु के चरनों पर, बार बार बलिहार, जग में....।।

अवतरण

जन्म जयंती आ गई है, सत्गुरु सच्चिदानंद की।
महिमावंत महर्षि, श्री सत्गुरु सर्वानन्द की।।

आज घड़ी है सबसे पावन, धरा धाम पै हुआ आगमन।
शुभ घड़ियाँ हैं, सबसे बड़े आनन्द की, महिमावंत....।।

श्री चरणों में सादर वंदन, प्रगट भए हैं ईश्वरी नंदन।
मूरत है ये वो ही, मुरली मुकुंद की, महिमावंत....।।

भाग्यशाली भिट्टशाह की भूमी, करते हैं सब उसे नमामी।
जन्मभूमि ये पावन, आनन्दकंद की, महिमावंत....।।

सुनिये सारे माई-भाई, जन्म जयंती की बधाई।
श्री चरणों में सादर दण्डवत् दिलीपानंद की, महिमावंत....।।

महिमा कवित्त

आज है पावन दिन, दिया गुरु ने दर्शन।
प्रसन्न हुआ तन मन, बात ये आनन्द की।।
झाँकी जाँकी है न्यारी, शोभा सिंधु सुखकारी।
जाऊँ मैं बलिहारी, श्रीचरणार्विन्द की।।
सुनो सब माई-भाई, सुंदर शुभ घड़ी आई।
जयंती है सुखदाई, सत्गुरु सर्वानन्द की।।

महिमा दोहे

सिंध देश भिट्टशाह में, आये धर अवतार।
सत्गुरू सर्वानन्द को, वन्दन बारम्बार।।

माता जिनकी ईश्वरी, पिता हैं शेवकराम।
पूर्व पुण्य से पाइया, सत्गुरू टेऊँराम।।

सर्वानन्द गुरुदेव की, महिमा अपरम्पार।
जो जन आये शरण में, भव से उतरे पार।।

सर्वानन्द गुरुदेव के, चरण कमल बलिहार।
भूले भटके जीवों का, करन आये उद्धार।।

–संत दिलीपलाल, प्रेम प्रकाश आश्रम, धुलिया

।। भजन ।।

मंदिर मेरे सतगुरां दा, बड़ा ही कमाल बंणिया
बाहरों सोहणा, ते अन्दरों विशाल बणिया, मंदिर मेरे....

1. सतनाम साक्षी वेख के दूरों, राही वी रुक जांदे
बड़ी शरधा दे नाल वह प्यारे, आके शीश झुकांदे,
मंदिर मेरे सतगुरां दा....

2. मंदिर दे विच आ के देखो, बैठे सतगुरु दानी
दोनों हत्थां लुटाई जावे, ऐदी रमज किसे ना जानी
मंदिर मेरे सतगुरां दा....

3. सत्गुरु दे चरनां दी रजु, जेहड़ा मस्तक ते लगावे
कई जनमां दे, अपने प्यारे सुते भाग्य जगावे
मंदिर मेरे सतगुरां दा....

4. सोंहम मन्त्र गुरां दा जो वी, सच्चे मन से ध्यावे
जन्म मरण दे चकर से वह, सदा मुक्त हो जावे
मंदिर मेरे सतगुरां दा....

–गुरदास सचेदवा, प्रेम प्रकाश मंदिर, राजपुरा (पंजाब)

मन को स्वस्थ कैसे रखें

ऋषि, मुनि, महापुरुष एवं आचार्यश्री गुरुदेव सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज कहते हैं कि मन अगर स्वस्थ-पवित्र है तो यही सबसे बड़ा तीर्थ है. मन चंगा तो घर में गंगा. मन को सबसे बड़ा तीर्थ कहा गया है. भगवान शंकराचार्य जी कहते हैं कि सबसे बड़ा तीर्थ तो मानव का मन ही है. पवित्र मन, इससे बड़ा कोई तीर्थ नहीं. इसलिए प्रयास ये हो कि मन पवित्र रहे, दिव्य रहे, संयत रहे, शांत रहे, बिखरा हुआ न रहे. मूढ़ता न रहे, चित्त में चंचलता न रहे, बुद्धि में भ्रम न रहे. जीवन में कोई आलस्य न रहे. इसके लिए कहाँ से लाएँ वो द्रव्य वो रसायन, वैसी सत्ता जो मन को स्वस्थ रखे, पवित्र करे. ऋषि-मुनि कहते हैं वो द्रव्य एवं रस सद्ग्रन्थों से मिलता है. इसलिए समय निकालकर ग्रंथों का मनन करना चाहिए. हम मन के आधीन रहते हैं. जैसा मानस सोचता है वैसे हम होते चले जाते हैं. मानस का प्रतिफल है, मानस का फलादेश है, मानस का उत्पादन है. हम जो कुछ भी हैं, अपने मन की उपज हैं. इसलिए ऐसा न हो कि मन में मूढ़ता रहे, मन में भ्रम रहे, आग्रह रहे, दुराग्रह रहे, मन में किसी के लिए शंका, भ्रम, भय रहे. मन में किसी के लिए किसी प्रकार का कोई ऐसा घृणित भाव रहे जो मैं नहीं रखना चाहता.

जैसे कैंची क्या करती है, कपड़े को काटती है, विभिन्न टुकड़ों में. सुई उसे सी देती है. कैंची कपड़े को अलग-अलग कर देती है- कैंची की एक विशेषता है कि कैंची एक में से अनेक कर देती है. अब अलग कर दिया कैंची ने, सुई उसे सी रही है. लेकिन ध्यान रखना, सुई उसे ऐसे ही नहीं सी पाती है, अलग हुई वस्तु में से कोई एक तन्तु, कोई एक धागा लेकर उसे फिर जोड़ती है. सुई सिलने का काम करती है. सुई ऐसे ही नहीं चलती जैसे कैंची चल गई थी. सुई कोई एक ऐसा सजातीय धागा चुनती है और उससे ही उस कपड़े को सी देती है. उसी कपड़े का कोई गुण, कोई तन्तु, कोई धागा लेती है और फिर कपड़े को सिलती है. तो फिर वो धीरे से उसे जोड़ देती है.

इसी प्रकार हम मनुष्यों में भी कैंची एवं सुई दोनों के ही गुण विद्यमान हैं. कभी किसी से जुड़े हैं और किसी से अलग भी हैं. कभी कैंची तो कभी सुई. ये फितरत आदमी की है. जब उसे अच्छा नहीं लगता तो कहता है कि मैं तेरा नहीं हूँ. परन्तु जैसे ही अच्छा लगने लगेगा तो कहेगा कि मैं तेरा हूँ अब. जब मन को अच्छा लगने लगा, सुख, सम्मान, आदर, प्रतिष्ठा मिले तो कहता है कि मैं तेरा हूँ और जब वो नहीं मिलता है, दुःख मिलता है, तो कहता है नहीं, हम आपके नहीं हैं. ऐसा कई घरों में देखा गया है कि लोग बोल नहीं रहे हैं, चुप हैं, अकेलापन आ गया है सम्बन्धों में. हम मनुष्य क्यों कहलाए; क्योंकि हम मन के आधार पर जीते हैं. हम मानस के आधीन रहते हैं. हम मन के अनुकूल चलते हैं और मन का एक ही स्वभाव है कि वो सुख का संचय करता है, वो अनुकूलताओं का संचय करता है. वो वैचारिक प्रधान्यता में रुचि और अपनी प्रकृति की पराध्यता में प्रत्येक जीव को रखना चाहता है, अपनी रुचि की पराध्यता में दूसरों को जकड़ना चाहता है. तुम ऐसे ही जियो जैसा मैं चाहता हूँ. सब हमारे अनुकूल बन जाएँ. जो हमारे हैं वे सब हमारे विचार के आधार पर चलें. जो हमारे अनुकूल नहीं तो मन क्या करता है- मन हमेशा आकांक्षाओं के गलियारे में भटकता हुआ मिलेगा. मन वहीं मिलेगा जहाँ अनुकूलताएँ मिलेंगी, ऋतु से, पदार्थ से, घटना से, पति-पत्नी से गुरु चेले से इनसे हमें अनुकूलता मिल जाए. ऐसे चंचल मन को वश मैं कैसे करें?

मन को वश में करने हेतु, परम पूज्य सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज अपनी ओजस्वी एवं अमृतमयी वाणी में कहते हैं कि आलस छोड़ो, मन के प्रमाद को छोड़ो, शरीर से भी काम लो और प्रभु नाम का

ध्यान भी करो. मन तो बोलेगा ही आज नहीं कल करेंगे, कल नहीं परसों करेंगे. ऐसा करते करते पूरी जिंदगी गुज़र जाएगी, परन्तु वह कल कभी नहीं आयेगा. अतः मन के प्रमाद को छोड़ो और अभी से ही प्रभु के चरणों में आकर उनकी सेवा करो, उनका ध्यान करो. उस कार्य को शुरू करो जिसके लिए इस पृथ्वी पर जनम लेकर आये हैं. जितना भी वक़्त मिला है जागकर उस ईश्वर का भजन करो, सुमिरन करो. शरीर के अंदर सभी इंद्रियों को जगाओ, गुरु की वाणी का जाप करो, गुरु के बताए रास्ते पर चलो. जो बात मन को शुद्ध करे उसी पर चलने का प्रयास करो. आँखों से गुरु का दर्शन करो, जीभ से उसके नाम का सुमरन करो, सभी इंद्रियों से प्रभु का ही जाप करो. इंद्रियों रूपी साधन मिले हैं उनका अच्छे से उपयोग कर प्रभु को प्राप्त करने का प्रयास करो. अगर मन एवं इंद्रियाँ तुम्हारे वश में नहीं रहीं तो फिर प्रभु की प्राप्ति तुम्हारे लिए दुर्लभ हो जाएगी. क्योंकि इस संसार में झूठ, कपट, पाप आदि निवास करते हैं, वे आपको गलत राह पर ले जाने हेतु प्रेरणा देते रहेंगे. यदि आप भटके तो राह से अलग हो जाएँगे. काम, क्रोध, लोभ, मोह, रजोगुण, तमोगुण आदि बुराईयों से दूर रहो. धर्म की राह पर चलो. मन को जगाओ, इंद्रियों को जगाओ एवं प्रमाद आलस्य छोड़कर उस कार्य की ओर अपनी यात्रा अभी से आरम्भ करो जिसके लिए इस जगत में आये हैं.

प्रातः स्मरणीय आचार्यश्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज जी ने भी सोलह शिक्षाओं में फरमाया है-

आदि मन्तर ले गुरू से, जाप जप धर ध्यान को।
जगत बंधन तोड़ विचरो, पाय आतम ज्ञान को।।

गुरु द्वारा प्रदत्त ज्ञान का स्मरण रोज़ करने से ही कल्याण की प्राप्ति होगी. इस स्मरण से मन में ज्ञान का प्रकाश होगा एवं अच्छे-बुरे की समझ आ जाएगी जिससे हम अच्छे कार्यों की ओर ही प्रवृत्त होंगे और मन की शांति को प्राप्त करेंगे. आत्मा का ज्ञान भी हमें गुरु के वचनों का पालन करने से प्राप्त होगा. आत्म तत्व का ज्ञान होते ही मन भी पूर्णतः स्वस्थ हो जाएगा.

संकलन-लेखन : **प्रहलाद सबनानी, ग्वालियर**

चार दिनों का मेला जग में, ...।

मेरी सुन ले प्रेमी प्यारे, क्यूँ अपना जन्म बिगाड़े
चार दिनों का मेला जग में, पल का नहीं पता रे....।

ये सबसे उत्तम चोला है, तुझे लाल मिला अनमोला है
तूँ लाभ उठा चाहे मुफ्त लुटा, पर जाना तुझे अकेला है
अपनी जड़ क्यूँ काट रहा, तूँ मार के आप कुल्हाड़े।
चार दिनों का मेला जग में, पल का नहीं पता रे....।

जग माया की रचना है, यहाँ जाग-जाग कर बचना है
यह माया ठगनी चातुर है, तूँ क्यों फँसने को आतुर है
पूर्ण सतगुरु की शरण बिना, यहाँ सारे बाजी हारे
चार दिनों का मेला जग में, पल का नहीं पता रे....।

तुझे करनी इक दिन भरनी है, बड़ी मुश्किल ये वैतरणी है
तूँ नाम सिमर और पार उतर, तेरे हाथ में तेरी सिमरनी है
काहे लूट-लूट कर लोगों को, क्यूँ करता फिरे भण्डारे
चार दिनों का मेला जग में, पल का नहीं पता रे....।

यहाँ पंछी जैसा डेरा है, कहाँ पक्का रैन बसेरा है
हर पंछी भी उड़ जाता है, जब होता नया सवेरा है
इक माता के गर्भ से जन्मे, पर कर्म सभी के न्यारे
चार दिनों का मेला जग में, पल का नहीं पता रे....।

ज़रा दे झाड़ू मन मन्दर में, रब बैठा सबके अन्दर में
क्यों बाहर उसको ढूँढ रहा, ना झाँके मन के अन्दर में
तूँ वृथा दर-दर भटक रहा, क्यूँ तृष्णा मन में धारे
चार दिनों का मेला जग में, पल का नहीं पता रे....।

वहाँ चलेगी हेरा-फेरी ना, मालिक के घर कुछ देरी ना
जो बोऐगा-वही काटेगा, औकात वहाँ कुछ तेरी ना
जप साखी शिवोऽहम् बन्दे तूँ, पा नित-नित नई बहारें
चार दिनों का मेला जग में, पल का नहीं पता रे....।

बिन तार की तूँ सारंगी है, तेरे मन की चाल कुरंगी है
हर दम बकरे सी मैं-मैं से, तेरी तान हुई बेढ़ंगी है
इक बार चढ़ा रंग उतरे ना, बस अमरापुर आ जा रे
चार दिनों का मेला जग में, पल का नहीं पता रे....।

सुनले तुझमें वो शक्ति है, हासिल उसको कर सकती है
गुरु चरणों का अनुरागी हो, मिल जाती असली मस्ती है
'वधवा' तूँ भी कर ले सिमरन, तेरी लग जाए नाव किनारे
चार दिनों का मेला जग में, पल का नहीं पता रे....।

-प्रेमप्रकाशी हरकेश वधवा, समालखा (हरियाणा)

भागवत चिन्तन

भक्त पुण्डरीक की कथा

प्रभास में भगवान् विराजमान हैं. उस समय दक्षिण भारत में चन्द्रभागा नदी के किनारे पुण्डरीक नाम का महान् भगवद्भक्त हुआ है. माता-पिता की सेवा करता है, स्मरण श्रीकृष्ण का करता है. माता-पिता में उसने भगवान् की भावना रखी है, मेरी माँ भगवान् है, मेरे पिता भगवान् हैं. माता-पिता की वृद्धावस्था है, अनेक रोग हुए हैं. अतिशय गरीब है. छोटी-सी झोंपड़ी में रहता है. दिन भर माता-पिता की सेवा करता है. भिक्षा माँगने के लिए जाता है. रसोई बना करके माता-पिता को खिलाता है.

उसको द्वारका जाने की इच्छा थी- मुझे एक बार द्वारकानाथ के दर्शन करना है. माता-पिता की सेवा छोड़ करके वह नहीं जा सका. सतत सेवा और स्मरण करने से उसका मन शुद्ध हुआ था. पवित्र मन में एक दिन ऐसा विचार आया कि मैं तो द्वारका में नहीं जा सकता, क्या द्वारकानाथ श्री रुक्मिणीजी को साथ लेकर के मेरे घर में नहीं आ सकते हैं?

वैष्णवों का प्रेम भगवान् का आकर्षण करता है. उसका प्रेम बहुत बढ़ गया था. भगवान् ने द्वारका-लीला का उपसंहार किया और द्वारकानाथ श्री रुक्मिणीजी के साथ दक्षिण भारत में चन्द्रभागा नदी के किनारे पुण्डरीक के घर में आये हैं. चौदहों भुवन के नाथ उनके आँगन में आये हैं.

मेरे घर भगवान् आये हैं! उसकी बहुत इच्छा थी कि श्री रुक्मिणी-द्वारकानाथजी की मैं पूजा करूँ. आज श्री रुक्मिणीजी के साथ द्वारकानाथ उसके घर में आये हैं, नाचने लगा है. भगवान् का वन्दन करके कहा है- मैं बहुत दरिद्री ब्राह्मण हूँ. छोटी-सी झोंपड़ी है. एक और माँ की गादी है, पिता की गादी है, अन्दर जगह नहीं है. भगवान् को और रुक्मिणी माता को पुण्डरीक ने ईंट दी है और कहा है- इसके ऊपर आप विराजें.

उसकी माता-पिता की भक्ति देख करके भगवान् प्रसन्न हुए हैं- तुम अपने माता-पिता की सेवा करो, फिर मेरी सेवा करना. पुण्डरीक माता-पिता की सेवा करने के लिये जाता है. रुक्मिणी-द्वारकानाथ वहाँ ईंट के ऊपर विराजमान हैं. पुण्डरीक माँ की सेवा करने के बाद पिताजी की सेवा करता है. उसको आने में विलम्ब हुआ है. मालिक का श्रीअंग अति कोमल है. प्रभु को परिश्रम हुआ, भगवान् ने दो हाथ कमर में रखे हैं. भगवान् तो आनंदमय हैं, भगवान् को क्या दुःख हो सकता है.

भगवान् ने जगत् को बोध दिया है, संसार-सागर इतना ही गहरा है-

प्रमाणं भवाब्धेरिदं मामकानां नितम्बः कराभ्यां धृतो येन तस्मात्।
विधातुर्वसत्यै धृतौ नाभिकोशः परब्रह्मलिंगं भजे पाण्डुरंगम्।।

आज भी भगवान् प्रत्यक्ष विराजमान हैं- मैं गया नहीं हूँ, मैं आपके लिये यहाँ खड़ा हूँ. जीव मेरा है, भगवान् जीव की प्रतीक्षा करते हैं. मेरा जीव मेरे पास में आये, मैं खड़ा हूँ, आपकी प्रतीक्षा करता हूँ.

संसार-समुद्र में बड़े-बड़े डूब गये हैं. जगत् को शिक्षण दिया है, कमर में हाथ रख करके बताया है- जो भगवान् के चरण का आश्रय करता है, जो जीव भगवान् का हो जाता है, भगवान् के सेवा-स्मरण में तन्मय होता है, उसके लिये संसार-सागर इतना ही गहरा है. कमर तक जल में कोई डूब नहीं सकता है. जगत् को समझाया है- घबराना नहीं, मैं गया नहीं हूँ, मैं आपकी प्रतीक्षा करता हुआ खड़ा हूँ. मेरे पास आओ.

भगवान् आज भी प्रत्यक्ष विराजमान हैं. भगवान् भागवत में विराजमान हैं, भगवान् सन्तों के हृदय में विराजमान हैं. द्वारका में विराजमान हैं, वहीं द्वारकानाथ पण्डरपुर में विराजते हैं, कमर में दो हाथ रखे हैं. द्वारकानाथ ही विट्ठलनाथ हैं. आज भी प्रत्यक्ष विराजमान हैं.

–साधक, श्री अमरापुर दरबार (डिब), जयपुर

आखिर वह क्या है?

आज समाज में एक विचित्र आपाधापी का वातावरण बन गया है. किसी के रुपये मार लेना, सौदा करके मुकर जाना आम बात हो गयी है. इस तरह की धूर्तता को सयानापन समझा जाता है. चोरी से हो चाहे बेईमानी से, धन आना चाहिये.

मुम्बई में कान्तिभाई नामक जवाहरात का एक दलाल था. बहुत ही नेक और परिश्रमी. वह स्वयं धनी नहीं था, किंतु व्यापारियों का उस पर पूरा विश्वास था, इसलिये वे बहुत रुपयों का माल उसे सौंप देते थे.

एक बार एक सेठ के यहाँ हीरों की बड़ी खरीदारी निकली. कान्तिभाई ने भी पसन्द करने के लिये एक पुड़िया उनको दी. भूल से उसके साथ एक पुड़िया और चली गयी, जिसमें बहुत अधिक कीमती नीले हीरे थे. दूसरे दिन रात में जब वह हिसाब मिलाने बैठा, तब उसे वह पुड़िया याद आयी और वह दौड़ा हुआ सेठ के घर गया. सेठ ने अलमारी से उसकी पुड़िया निकालकर दिखा दी और कहा कि इसके साथ और कुछ नहीं मिला था. कान्तिभाई बड़ा दुःखी और चिन्तित होकर हीरों के मालिक के पास पहुँचा और सारी बात उन्हें बतायी. जौहरी कान्तिभाई की ईमानदारी से परिचित था. ढाढ़स बँधाते हुए बोला, 'घबराओ मत! कहीं रखकर भूल गये होंगे; मिल जायगी.' आठ-दस दिन बीत गये और हीरों का कोई पता नहीं चला. वह फिर जौहरी के पास गया और बोला- 'उन हीरों का पूरा मूल्य इतना अधिक है कि चुकाना मेरे बस का नहीं. आपकी बड़ी कृपा होगी यदि केवल लागत दाम मुझसे ले लें. अपना सब कुछ बेचकर भी आपका रुपया चुका दूँगा.'

दूसरे दिन वह फिर सेठ के यहाँ गया और पैर पकड़कर रोता हुआ कहने लगा- 'मेरे बाल-बच्चे बर्बाद हो जाएँगे. अब कौन मेरा विश्वास करेगा? कौन मुझे जवाहरात सौंपेगा? मेरा तो धन्धा ही चौपट हो जायगा. एक बार फिर देख लीजिये, मुझे लगता है, आप हीरे कहीं रखकर भूल गये हैं.' उस दिन सेठ ने आँखें लाल-पीली करके उसे धक्के मारकर बाहर निकलवा दिया. इससे कान्तिभाई को इतना सदमा पहुँचा कि वह विक्षिप्त-सा हो गया. रात में उठकर बैठ जाता और रोने लगता. घरवालों के समझाने पर वह एक अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति के साथ उस सेठ के पास गया और उनके समझाने-बुझाने पर दोनों ने एक पंच मान लिया.

पंच के समक्ष कान्तिभाई ने अपना पक्ष इस प्रकार रखा-- 'उस दिन मैं और कहीं गया नहीं, इसलिये वह दूसरी पुड़िया भी मेरी पहली पुड़िया के साथ इन्हीं के यहाँ भूल से आयी है. प्रमाण अथवा गवाह मेरे पास कुछ भी नहीं है. क्योंकि मैंने इनको पुड़िया अकेले में दी थी. अपनी जानकारी में भी मैंने यह पुड़िया इनको नहीं दी.' उधर सेठ ने अपने जवान लड़के के सिर पर हाथ रखकर सौगन्ध खायी कि 'मेरे पास इसकी कोई दूसरी पुड़िया नहीं आयी.' फैसला कान्तिभाई के विरुद्ध हो गया. अचानक वह सेठ के पैरों में गिर पड़ा और कहने लगा, 'यह आपने क्या किया? हीरे आपके पास हैं; मैं जानता हूँ, किंतु क्यों आपने इकलौते जवान बेटे के सिर पर हाथ रखकर इतनी बड़ी सौगन्ध खायी? भगवान् का दिया सब कुछ आपके पास है. किस बात की कमी है?' रोता-बिलखता वह अपने घर चला गया.

संयोग से तीन-चार दिनों बाद ही सेठ के लड़के को गर्दनतोड़ बुखार (मेनिन्जाइटिस) हो गया और वह दूसरे दिन ही चल बसा. सेठ का घर शोक में डूब गया, किंतु कान्तिभाई को भी कम दुःख नहीं था. वह सोचता- 'मेरे कारण ही यह संयोग बना.'

दो-तीन दिन बाद सेठ हीरे की वही पुड़िया लेकर कान्तिभाई के पास आया और गले लगकर बिलखने लगा, 'भाई, मेरे मन में लालच आ गया और बेटा ले गया. भगवान् के यहाँ देर है, अन्धेर नहीं. मेरी पत्नी कहती है- मेरे पापाचार ने बेटे के प्राण ले लिये.'

मन बड़ा उदास हो जाता है. सोचता हूँ, आखिर वह क्या है, जो आदमी को बेईमान बनने को बाध्य कर देता है और वह पाप कर बैठता है? किस अभाव से प्रेरित होकर सेठ ने ऐसा काम किया! अपार धन था, विवेक भी था उसके पास. सोच-समझकर ही हीरे रखे थे. कोई प्रमाण तो है नहीं. क्या कर लेगा? बुद्धिमान् भी था, तभी बड़ा कारोबार चलाता था, पर ऐसी क्या कमी थी उसके पास? क्या चरित्र की? लड़का चला गया, हीरे रह गये.

हीरे रख लेने वाला सेठ भी चला जायगा, हीरे रह जायेंगे. हीरे संग नहीं जाते, तृष्णा और लोभ ही संग जाते हैं. इन्हीं से तो अगला वपु बनेगा.

इसके साथ ही ऐसे उदाहरण भी हैं कि लोग भूखे रह जाते हैं, किंतु बेईमान नहीं हो पाते, हो ही नहीं पाते. मैं सोचता हूँ कि वह क्या है, जो किसी को गरीबी के भीषण कष्ट सहकर भी ईमानदार होने को बाध्य कर देता है? कैसी भी मुसीबत आ पड़े, ऐसा व्यक्ति चाहकर भी बेईमान नहीं हो सकेगा. उसका जमीर उसको शान्त नहीं बैठने देगा. हाँ, याद आया, यह जमीर ही तो है या विवेक. कहीं यह इस कदर भ्रष्ट हो गया है कि अरबों-खरबों की सम्पत्ति होते हुए भी लाखों के हीरों के लिये भटक जाता है. कहीं यह इतना बुलंद है कि एक आना वापस करने के लिये बूढ़ा बाप दूसरे शहर से कितना ही खर्च करके, कष्ट सहकर आता है, कर्ज चुकाने--

काफी पुरानी बात है. सन् १९५० ई. के लगभग. प्रातःकाल का समय था. बच्चे स्कूल चले गये थे और पति महोदय ऑफिस. घर में अकेली होने के कारण सरला बहन दरवाजे पर आ बैठीं. सामने फैली हरी-भरी प्रकृति का आनन्द ले रही थीं कि आवाज सुनायी दी- 'दरी लो, दरी.' एक तरुण व्यक्ति पीठ पर गट्ठर बाँधे दरियाँ बेच रहा था. पास आकर उसने अपना गट्ठर खोला और कई दरियाँ सामने फैला दीं. एक दरी उन्हें पसन्द आ गयी तो युवक से मोलभाव करने लगीं, परंतु उसे चौदह रुपये पंद्रह आने बताये थे और उसी पर अड़ा रहा, जरा भी टस-से-मस नहीं हुआ, 'न मैं पहले ज्यादा दाम बताता हूँ, न पीछे कम करता हूँ. क्यों मैं आपका और अपना समय बर्बाद करूँ?' सरला बहन ने देखा कि लड़के की बात में सच्चाई थी, सो उन्होंने कहा- सो पन्द्रह रुपये दे दिये. चूँकि एक आना उनके पास नहीं था, सो उन्होंने कहा- 'फिर कभी दे जाना.' और लड़का चला गया.

काफी समय बीत गया. सरला जी एक आने की बात बिल्कुल भूल गयीं. अचानक एक दिन देखा एक बूढ़ा आदमी उनके मकान के आसपास चक्कर काट रहा था. उत्सुकतावश उन्होंने आगे बढ़कर पूछा कि वह क्या ढूँढ़ रहा है? वृद्ध ने बड़े दुःखी स्वर में कहा- 'मेरा बेटा कुछ दिन पहले इस शहर में दरी बेचने आया था. वापस लौटने पर वह बीमार पड़ा और ईश्वर का प्यारा हो गया. मरने से कुछ घण्टे पहले उसने आपके मकान का पता बताते हुए कहा कि उसके ऊपर एक आने का कर्ज बाकी है, वह मैं जरूर चुका दूँ. खुले पैसे नहीं होने के कारण उस दिन वह आपका एक आना नहीं चुका सका था. आपका कर्ज तो लौटाना ही था और यह उसकी अन्तिम इच्छा भी थी, इसलिये मैं आया हूँ.' कहते-कहते वृद्ध की आँखों में आँसू छलक आये. वह बोला- मेरे बेटे के अन्तिम शब्द थे- 'बाबा! जीवन भर मैंने ईमानदारी से रोजी कमाई है, मौत के बाद कोई यह न कह दे कि मैंने किसी का पैसा रख लिया.' सरला बहन ने वृद्ध को सान्त्वना दी, जलपान कराया और विदा किया.

आखिर वह क्या है, जो जमीर को, विवेक को, आत्मा को संस्कारित करता है. एक अरबपति का विवेक भटक सकता है, पर एक गरीब दरीवाले का जमीर नहीं डिग सकता. उसे एक क्या दस पुड़िया हीरों की दे दी जायँ तो भी मन नहीं डोलेगा. यह बात केवल रुपयों पर नहीं, जीवन के हर क्षेत्र में लागू होती है-

अमेरिका में एक वकील ने बहुत ही सस्ते दामों में एक जमीन खरीदी. विक्रेता एक किसान था. रजिस्ट्री भी हो गयी. दो दिनों के बाद किसान वकील के पास आया और बोला, 'मेरी पत्नी कहती है- इन दामों में यह जमीन हमें नहीं बेचनी चाहिये. अतः आप जमीन के कागजात मुझे वापस कर दीजिये.' वकील सच्चा आदमी था, किंतु मुस्कराते हुए उसने कहा- 'इतनी सस्ती जमीन यदि मैं वापस नहीं दूँ तो?' किसान ने कहा, 'सीधी-सी बात, मैंने आपकी कोई हानि नहीं की है, फिर आप मेरा नुकसान क्यों करेंगे?' वकील ने जमीन वापस कर दी. वकील की आचार-संहिता में यह व्यवहार सदाचार के अन्तर्गत आता था.

तो क्या सदाचार जमीर अर्थात् अन्तरात्मा को प्रभावित करता है? क्या सदाचार चरित्र का ही अंग नहीं? सच्चरित्र व्यक्ति का आचार सत् तो होगा ही. चरित्र जितना ऊँचा होगा, लोभ के सामने वह उतना ही तनकर खड़ा हो सकेगा.

संकलित : कल्याण गीता प्रेस

कहानी

चिकना घड़ा

मेरे पति का एक विचित्र स्वभाव यह था कि यदि कोई उनसे अपनी दु:ख-दर्द भरी बात सुनाकर सहायता के लिये कहता तो उनका हृदय एकदम द्रवित हो जाता और उसके दु:ख-निवारण के लिये वे इतने उतावले हो जाते कि जब तक उसका कोई हल ढूँढ़ न लें, तब तक उन्हें चैन नहीं पड़ता. ऐसा करने में कई बार उन्होंने रुपये-पैसों के अतिरिक्त तन के कपड़े तक उतारकर लोगों को दे दिये थे.

उनके ऐसे व्यवहार के कारण मैं कई बार उनसे उलझ पड़ती थी और कहा करती- 'हम गृहस्थ हैं, त्यागी नहीं हैं. इस तरह करते रहने से हमारा घर उजड़ जायगा, परंतु मालूम नहीं आपके अन्दर यह कमजोरी क्यों घर कर चुकी है. इसका अन्त अच्छा नहीं होगा. इस तरह अपने-आपको लुटाते रहना बुद्धिमत्ता नहीं है.'

बार-बार ऐसा समझाने पर भी उन पर कुछ असर नहीं होता था और मेरी फटकार को हँसी में उड़ाते हुए वे कह देते- 'तुम पगली हो. सुनो! जब मैं पैदा हुआ था, तब अपने साथ कुछ भी लेकर नहीं आया था और जब मैं बहुत छोटा ही था, तभी मेरे माँ-बाप की छाया मेरे सिर से उठ गयी थी और तब मैं अनाथ रह गया था. अब... अब... कई दयालु सज्जनों की दया के कारण ही मैं इतना बड़ा हो गया हूँ... भगवान् ने मुझे कितना बड़ा व्यापारी बना दिया है. ...ये सब वस्तुएँ मेरी नहीं हैं... भगवान् की ही देन हैं. इसलिये भगवान् के बन्दों का इनमें थोड़ा-बहुत अधिकार होना ही चाहिये.'

संसार में रहकर मुझे उनकी ऐसी साधुओं-सरीखी बातें बहुत बुरी लगा करती थीं. विशेषकर इसलिये कि मैं इसे उनकी मानसिक कमजोरी के सिवा और कुछ नहीं समझती थी. इसीलिये मैं उनके ऐसे विचारों से कभी सहमत नहीं होती थी और सदैव विरोध में कहती- 'हमारे भी बाल-बच्चे हैं, हमें उनकी भी चिन्ता करनी है. आप हैं कि जो भी आता है, उसके लिये पागल हो उठते हैं. इस तरह का आदमी तो मैंने आजतक कोई नहीं देखा. यदि आप ऐसे ही करते रहे तो इसका बहुत बुरा परिणाम भोगना पड़ेगा. संसार में रहकर व्यावहारिकता को हाथ से नहीं खो देना चाहिये.'

मेरा ऐसा तर्क सुनकर वे तड़प उठते और झल्लाकर कहते- 'क्या तुम्हारा यह मतलब है कि बस मेरा संसार अपने घर के इर्द-गिर्द ही घूमते-घूमते समाप्त हो जाना चाहिये? यह तुम्हारी संकीर्णहृदयता है. चूँकि मनुष्य अभी तक अपने घेरे से बाहर निकलना सीख नहीं पाया है, यही कारण है कि दूसरे मनुष्यों का दु:ख-दर्द जानने वाले संसार में कम देखने में आते हैं. स्वार्थपरता का जोर बढ़ रहा है और मानव मानव को बचाने के बदले उसका गला काटता जा रहा है... तुम्हें मेरे साथ रहकर कुछ सीखना होगा.'

'सीखने-सिखाने की भी कोई सीमा होती है.' मैं जल-भुनकर कहती- 'आपने कभी न यह देखा है, न सोचा है कि जो आपके पास आ रहा है, वह असल में अधिकारी भी है या नहीं. लोगों को आपकी दयालुता कहूँ या कमजोरी- उसका ज्ञान हो चुका है और वे इसका लाभ उठाते चले जाते हैं.'

मैं सैकड़ों बार उन्हें इस तरह समझा-समझाकर थक-सी गयी थी, परंतु वे एक थे जैसे चुपड़ा हुआ घड़ा! प्रतिदिन अपनी आँखों से ऐसा होते देखकर अन्ततः मैंने सोचा कि लड़ाई-झगड़ा करने से तो ये अपनी आदत बदलेंगे नहीं, इसलिये अब इन्हें अपनी शपथ दिलाऊँगी. मुझे पता था कि मेरी शपथ का किसी हालत में भी ये उल्लंघन नहीं कर पायेंगे; क्योंकि इनकी जबान से प्रायः मैंने यह कहते हुए सुना था- 'यह सब तुम्हारा ही प्रताप है. तुम्हारे कदम पड़ने पर ही लक्ष्मी मेरे ऊपर प्रसन्न हुई हैं. यदि तुम मुझे न मिलती तो मेरा जीवन मिट्टी में मिल जाता. तुम्हारे लिये मैं सब कुछ करने को तैयार हूँ' और मुझे अपने अन्तिम हथियार को आजमाने का संयोग भी जल्दी ही मिल गया.

नवम्बर का महीना था. वे काम पर जाने को अभी तैयारी कर ही रहे थे कि नीचे से किसी ने घंटी बजायी. मैंने खिड़की से झाँका. एक साँवले रंग का नौजवान खड़ा था. उसने पूछा- 'क्या बाबूजी घर पर हैं?'

एकाएक मेरे मन में एक शंका उत्पन्न हुई. सोचा,

कुछ माँग लेकर आया होगा. मन में आया; कह दूँ कि वे घर पर नहीं हैं. मैं अभी ऐसा करने की बात सोच ही रही थी कि इन्होंने झट से नीचे ताका और जोर से पुकारा- 'देवेन्द्र! आ जाओ.'

वह कमरे में आकर बैठ गया. मैं कमरे से तो चली गयी, किंतु दीवाल के सहारे खड़ी होकर उनकी बातें सुनती रही.

देवेन्द्र कह रहा था- 'बाबूजी! आपकी कृपाओं का मैं बहुत आभारी हूँ. आपकी कृपा से और आपकी सहायता से, जो आप मेरी फीस के सम्बन्ध में करते रहे हैं, मैं आज बी.ए. की परीक्षा में पास हो गया हूँ.'

उन्होंने उसकी पीठ ठोंकी और उसे प्रोत्साहन देते हुए कहा- 'अब तुम्हारा समझो कष्ट कट गया. कहीं नौकरी लग जायगी. चेष्टा करो.'

'बाबूजी!' देवेन्द्र ने नम्रतापूर्वक कहा- 'आपकी बात तो ठीक है, परंतु नौकरी भी तो बिना सिफारिश के नहीं लगती.'

'चिन्ता मत करो. भगवान् करे तुम्हें नौकरी भी शीघ्र मिल जाय. मैं तुम्हारी किसी अच्छी-सी जगह पर सिफारिश कर दूँगा... तुम मुझसे मिलने रहना.'

देवेन्द्र ने आँखों में कृतज्ञता लाते हुए कहा- 'मैं आपका धन्यवाद किन शब्दों में करूँ बाबूजी!'

'इसमें धन्यवाद करने की क्या बात है. तुम मेरे प्रिय हो, जहाँ तक मुझसे हो सकेगा, मैं तुम्हारी अवश्य सहायता करूँगा.'

'मैं आपको याद दिलाता रहूँगा. आपके बिना मेरा अमृतसर में और कोई भी तो नहीं है. सब रिश्तेदार अपने आप में मस्त हैं. निस्सन्देह वे सब खाते-पीते हैं, किंतु कभी किसी ने मेरी सहायता नहीं की. आपने जो मेरी सहायता आज तक की है, मैं जीवन भर भूल नहीं सकूँगा और सारी आयु आपका पानी...'

इन्होंने उसकी बात काटते हुए कहा- 'ऐसी बातें नहीं सोचना चाहिये. मैं कौन हूँ जो किसी की सहायता कर सकूँ. सब चक्र ऊपरवाला ही चलाता है.'

देवेन्द्र ने जाने से पहले कहा- 'बाबूजी! एक... अर्ज करूँ.' 'हाँ, हाँ! झिझक किस बात की?'

देवेन्द्र ने रुकते-रुकते कहा- 'मेरे पास जो रजाई है, वह चार-पाँच साल हुए; बनवायी थी... और अब बिल्कुल फट चुकी है... उसमें मैं आजकल इस सख्त सर्दी में अकड़ जाता हूँ... एक रजाई यदि मिल जाय... तो इस सर्दी से बच जाऊँगा... नहीं तो....'

एक क्षण कुछ सोचकर उन्होंने कहा- 'कल दोपहर को दूकान पर आना, मैं तुम्हारे लिये रजाई का प्रबन्ध कर दूँगा.'

देवेन्द्र जब चला गया, तब मैंने इस विषय पर पर्याप्त नोक-झोंक की; किंतु वे हारने वाले कब थे. अन्ततः मैंने अन्तिम तीर चलाया. अपनी शपथ दिलायी. उन्होंने उत्तर में मुझे आश्वासन देते हुए कहा- 'मैं तुम्हारी शपथ करता हूँ कि बाजार से रजाई खरीदकर नहीं दी जायगी.'

मुझे उस दिन पहली बार अपनी विजय पर प्रसन्नता हुई थी, परंतु उन्होंने जो शपथ की थी, वह तो मुझे बाद में पता चला कि वह एक ऐसी शरारत थी जो वकील लोग बातें करते समय किया करते हैं. देवेन्द्र के आने के दूसरे दिन हम लोगों को दिल्ली उनके बड़े भाई की लड़की के विवाह में जाना था. मैं दोपहर को सब सामान तैयार करके बिस्तर आदि बाँधकर अपने मैके जब मिलने गयी, तब रास्ते में इन्हें कहती गयी कि आप शाम को घर पर जल्दी आ जाना. मैंने देखा कि देवेन्द्र उस समय उनके पास बैठा था. उसे देखकर न मालूम मुझे उस पर क्यों क्रोध आ गया था.

दिल्ली पहुँचकर जब रात को बिस्तर लगाये गये तो इनकी रजाई का वहाँ कुछ पता न चला, बहुत-से लोग आये हुए थे. मैंने सबकी रजाइयाँ एक-एक करके उलट-पुलट करके देखीं, किंतु इनकी रजाई सचमुच गुम थी. मैं बड़ी व्याकुल हो रही थी. मैंने स्वयं ही तो इनका बिस्तर तैयार किया था, फिर रजाई गुम कैसे हो गयी. रास्ते में हमने बिस्तर खोले ही न थे. जो कम्बल हमारे पास थे, उन्हीं से रास्ते में गुजारा हो गया था. मैं घबरायी कि इन्हें जब अपनी रजाई नहीं मिलेगी तो ये मुझ पर रुष्ट होंगे. एक शंका पैदा हुई- 'सम्भवतः मैं जल्दी-जल्दी में अमृतसर ही भूल आयी हूँगी.'

रात को जब इनके भाई के घर से नयी रजाई लेकर इनके बिस्तर पर रखी तो सोते समय इन्होंने मुझसे सरलतापूर्वक पूछा- 'मेरी रजाई कहाँ है?'

मैंने डरते-डरते उत्तर दिया- 'बिस्तर बाँधते समय सम्भवतः मैं अमृतसर ही भूल आयी हूँ.'

'वाह! तुम भी बड़ी चतुर स्त्री हो!' उन्होंने भोले भाव से कहा- 'मेरे साथ तर्क-वितर्क करने में तो कभी भूल नहीं करती हो और इतनी बड़ी रजाई वहाँ कैसे भूल गयी?'

मैं हारे हुए सिपाही के सदृश थी, क्या उत्तर देती. सहसा मेरे मुँह से निकल गया- 'अवश्य इसमें आपकी शरारत होगी.'

'मेरी शरारत! इस तरह थोड़े ही जीता जा सकता है?' उन्होंने मुस्कराते हुए कहा.

मैं अभी कुछ उत्तर दे ही नहीं पायी थी कि जेठजी आ गये और मैं चुपके-से वहाँ से खिसक गयी.

विवाह की भीड़-भाड़ में रजाई की बात मेरे दिमाग से उतर-सी गयी थी. विवाह के बाद बाहर से आये हुए लोग जा रहे थे. भीड़-भाड़ कम हो रही थी. एक दिन दोपहर को पोस्टमैन कुछ चिट्ठियाँ फेंक गया. उनमें एक चिट्ठी इनके नाम की भी थी. मैंने उसे खोल लिया. जब मैंने उसे पढ़ा तो मेरे विस्मय की कोई सीमा न रही. पत्र देवेन्द्र का था. लिखा था-

'पूज्य पिताजी! मुझे विश्वास है कि आप सब प्रसन्नतापूर्वक दिल्ली पहुँच गये होंगे. बहुत दिनों के बाद मैं अब रात को आराम से सोया करता हूँ. आपकी दी हुई रजाई से मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे मैं आपके साथ ही सोता हूँ और आप मुझे थपकियाँ दे-देकर सुलाते रहते हैं. इस समय भी मैं इस निष्प्राण रजाई के तार-तार में आपके दर्शन कर रहा हूँ. ऐसा हो भी क्यों न! आपकी मेरे प्रति प्रीति सदा ही मिलावट से दूर रही है. यह रजाई आपके हृदय की भीतरी भावनाओं का जीता-जागता चित्र है.'

पत्र समाप्त करते-करते न मालूम क्यों और कैसे मेरे नेत्रों में अलौकिक आनन्द और शान्ति के अश्रु छलछला आये, जिन्होंने मेरे हृदय के अन्तरतम तारों को झकझोर कर जन्म लिया था. उनकी रजाई ने एक गरीब प्राणी को कितना बड़ा सुख पहुँचाया था, यह सोचते-सोचते मेरी आत्मा उनकी सहायता के आगे झुक-सी गयी.

जब वे घर आये, तो मैंने वह पत्र उन्हें दे दिया. पत्र पढ़कर उन्होंने मुझसे हँसते हुए कहा- 'अब तो खोयी हुई रजाई मिल गयी है न?'

मेरी आँखों में अपार प्रसन्नता थी, फिर भी मैं उन्हें उनके सामने उठा न सकी. केवल इतना ही कह पायी- 'आज से मैंने निश्चय कर लिया है कि कभी आपका विरोध नहीं किया करूँगी.' अब मुझे विश्वास हो गया कि मेरे पति चिकने घड़े के सदृश हैं. (संकलित)

चैन्नई+ श्रीरामेश्वरम् धाम वार्षिकोत्सव

वर्ष 2020 में 14 से 18 जनवरी को चैन्नई में प्रेम प्रकाश आश्रम का वार्षिकोत्सव एवं 19 से 21 जनवरी तक श्रीरामेश्वरम् धाम में वार्षिकोत्सव का आयोजन होगा.

वार्षिकोत्सव में शामिल होने वाले इच्छुक प्रेमियों के सूचनार्थ--

ट्रेनों में चार महीने पूर्व रिजर्वेशन शुरू हो जाता है जो इस महीने शुरू हो जायेगा. इन मेलों में शामिल होने की इच्छा रखने वाले प्रेमीजन 17 जनवरी को चैन्नई पहुँच जावें– इस प्रकार से उन प्रेमियों को रेल/हवाई जहाज आदि में अपना आरक्षण सुनिश्चित करवा लेना चाहिए. उन प्रेमियों को चैन्नई से श्रीरामेश्वरम् धाम जाने के लिए 18 जनवरी को ट्रेन नं. 22661 रामेश्वरम् एक्स. में जो वहाँ से सायंकाल 5:50 बजे चलकर अगले दिन यानि 19 जनवरी को प्रातः 4:35 बजे रामेश्वरम् पहुँचायेगी एवं गाड़ी संख्या 16851 रामेश्वरम् एक्स. जो रात्रि 7:15 बजे चलकर रामेश्वरम् 19 जनवरी को प्रातः 8:35 बजे पहुँचेगी, इसी प्रकार वापसी के लिए रामेश्वरम् से 21 जनवरी को 16852 जो रामेश्वरम् से सायं 5 बजे चलकर चैन्नई 22 जनवरी को प्रातः 6:35 बजे पहुँचेगी– में रिजर्वेशन आवश्यक रूप से करवा लेना चाहिए.

नोट : जयपुर के प्रेमी अमरापुर दरबार से व अन्य शहरों के प्रेमी अपने शहर की दरबार (प्रेम प्रकाश आश्रम) से अनुमति लेकर ही रिजर्वेशन करवायें

29 सितम्बर से 7 अक्टूबर नवरात्रा विशेष

माँ दुर्गा के नौ दिव्य स्वरूपों के आशीर्वाद

माँ अम्बे, माँ दुर्गा, माँ भगवती.... चाहे नाम कोई भी हो. इन नौ दिनों में वह भरपूर आशीर्वाद देती है. नौ दिनों की नौ देवियाँ अपने विशेष आशीर्वाद के लिए जानी जाती हैं. आइए जानें किस देवी से मिलता है कौन-सा शुभ वरदान-

1. शैल पुत्री : माँ दुर्गा का प्रथम रूप है शैलपुत्री. पर्वतराज हिमालय के यहाँ जन्म होने से इन्हें शैलपुत्री कहा जाता है. नवरात्रि की प्रथम तिथि को शैलपुत्री की पूजा की जाती है. इनके पूजन से भक्त सदा धन-धान्य से परिपूर्ण हो जाता है.

2. ब्रह्मचारिणी : माँ दुर्गा का दूसरा रूप ब्रह्मचारिणी है. माँ दुर्गा का यह रूप भक्तों और साधकों को अनंत कोटि फल प्रदान करने वाला है. इनकी उपासना से तप, त्याग, वैराग्य, सदाचार और संयम की भावना जाग्रत होती है.

3. चन्द्रघंटा : माँ के तीसरे स्वरूप को चंद्रघंटा कहा जाता है. इनकी आराधना तृतीया तिथि को की जाती है. इनकी उपासना से सभी पापों से मुक्ति मिलती है. वीरता के गुणों में वृद्धि होती है. स्वर में दिव्य अलौकिक माधुर्य का समावेश हो जाता है व साधक का रूप निखरता है.

4. कुष्मांडा : माता के चौथे स्वरूप कुष्मांडा की पूजा आराधना चतुर्थी तिथि को होती है. इनकी उपासना से साधक सिद्धियों निधियों को प्राप्त करता है एवं उसके समस्त रोग-शोक दूर होते हैं, यश का भागी बनता है.

5. स्कंदमाता : नवरात्रि का पाँचवां दिन उनके स्वरूप स्कंदमाता की पूजा-आराधना का होता है. माता के उपासक को इनकी पूजा से समस्त इच्छाओं की पूर्ति होकर असीम सुखों की प्राप्ति होती है एवं मोक्ष मिलता है.

6. कात्यायनी : माँ दुर्गा का छठवाँ दिव्य स्वरूप माँ कात्यायनी का है. छठी तिथि पर इनकी पूजा-अर्चना से साधक में शक्ति का संचार होता है. माता कात्यायनी साधक को सबसे बड़े दुश्मनों (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) का संहार करने में सक्षम बनाती है. इनका ध्यान गोधूलि वेला में करना होता है.

7. कालरात्रि : नवरात्रि की सप्तमी को माँ कालरात्रि की पूजा का विधान शास्त्रों में आता है. इनकी पूजा-आराधना से सभी पापों से मुक्ति मिलती है, दुश्मनों संकटों का नाश होता है व साधक तेजस्वी बनता है.

8. महागौरी : देवी दुर्गा का आठवाँ दिव्य स्वरूप माँ गौरी के रूप में जाना जाता है. इनका अष्टमी के दिन पूजा उपासना का विधान है. इनकी आराधना से समस्त पापों का क्षय होता है अनन्त सुखों की प्राप्ति होती है. चेहरा कान्तिमय बनता है. शत्रु शमन होता है.

9. सिद्धिदात्री : माँ के नौवें स्वरूप सिद्धिदात्री की पूजा-आराधना करने से साधक को वाक्सिद्धि, भावना सिद्धि आदि समस्त निधियों की प्राप्ति होती है.

प्रेम प्रकाश आश्रम, नसीराबाद का वार्षिकोत्सव

मंगलवार 24 से शनिवार 28 सितम्बर, 2019 तक

27 सितम्बर को प्रातः 9 बजे पूज्य सद्गुरु महाराज जी का मंगल आगमन

प्रतिदिन प्रातः 8 से 10 व सायंकाल 5 से 8 बजे तक सत्संग

28 सितम्बर दोपहर 12 बजे पल्लव पाकर मेले का समापन

पताः प्रेम प्रकाश आश्रम, सिन्धी मोहल्ला, नसीराबाद (राज.) 93351 14850

माँ के नौ रूपों से औषधियों रूपी आशीर्वाद

औषधियों में विराजमान नवदुर्गा

ब्रह्माजी के दुर्गा कवच में वर्णित माता नवदुर्गा नौ विशिष्ट औषधियों में विराजमान हैं-

1. प्रथम शैल पुत्री (हरड़) : कई प्रकार के रोगों में काम आने वाली औषधि हरड़ हिमावती है जो देवी शैलपुत्री का ही एक रूप है. यह आयुर्वेद की प्रधान औषधि है. यह पथया, हरीतिका, अमृता, हेमवती, कायस्थ, चेतकी और श्रेयसी सात प्रकार की होती है.

2. ब्रह्मचारिणी (ब्राह्मी) : ब्राह्मी आयु व स्मरण शक्ति बढ़ाकर, रक्तविकारों को दूर कर स्वर को मधुर बनाती है. इसलिये इसे सरस्वती भी कहा जाता है.

3. चंद्रघंटा (चंदुसूर) : यह एक ऐसा पौधा है जो धनिए के समान लगता है. यह औषधि मोटापा दूर करने में लाभप्रद है. इसलिए इसे चर्महंती भी कहते हैं.

4. कूष्मांडा (पेठा) : इस औषधि से पेठा मिठाई बनती है. इसलिए इस रूप को पेठा कहते हैं. इसे कुम्हड़ा भी कहा जाता है जो रक्त विकार दूर कर पेट को साफ करने में सहायक है. मानसिक रोगों में यह अमृत समान है.

5. स्कंदमाता (अलसी) : देवी स्कंदमाता औषधि के रूप में अलसी में विद्यमान है. यह वात व कफ रोगों की नाशक औषधि है.

6. कात्यायनी (मोइया) : माता देवी कात्यायनी को आयुर्वेद में कई नामों से जाना जाता है. जैसे अम्बा, अम्बालिका व अम्बिका. इसके अलावा इन्हें मोइया भी कहते हैं. यह औषधि कफ, पित्त व गले के रोगों का नाश करती है.

7. कालरात्रि (नागदौन) : यह देवी नागदौन औषधि के रूप में जानी जाती है. यह सभी प्रकार के रोगों में लाभकारी और मन एवं मस्तिष्क के विकारों को दूर करने वाली औषधि है.

8. महागौरी (तुलसी) : माँ महागौरी का आठवाँ स्वरूप तुलसी सात प्रकार की होती है- सफेद तुलसी, काली तुलसी, मरूता, दवना, कुढेरक, अर्जक और षटपत्र. ये रक्त को साफ कर हृदय रोगों का नाश करती है.

9. सिद्धिदात्री (शतावरी) : माँ दुर्गा का नौवाँ सिद्ध रूप सिद्धिदात्री है जिसे नारायणी शतावरी कहते हैं. यह बल, बुद्धि एवं विवेक के लिए उपयोगी औषधि है.

।। भजन ।।

तर्ज : **क्या मिलिये ऐसे लोगों से......**

टेक : टेऊँराम के दर पर आकर- सेवा रोज कमाना है
इनके पावन चरणों में आकर- नाम गुरु (हरीं) का ध्याना है

1. टेऊँराम ने हम जीवों को- सत्मार्ग दिखलाया है
हम सबको हरीं कथा बताकर- यह संदेश सुनाया है
दान-धर्म से पीछे न हटना- अच्छे कर्म कमाना है...

2. सतगुरु स्वामी सर्वानन्द जीं- प्यारे संत सुजान है
हम जीवों से भगती कराये- ये वो संत महान है
नाम गुरु का सबको जपाते- काम जो अंत में आना है...

3. प्रीतम प्यारे शांतिप्रकाश जीं- करते मन को शांत है
वेदों का जो ज्ञान बताये- सचमुच वो वेदांत है
मूरत इनकी मन में बसाकर, निर्मल मन को बनाना है...

4. संत सच्चे हरिदासराम जीं- सचमुच हरीं के दास है
इनके वचनों पर जो बन्दा- करता यहाँ विश्वास है
आना संतों के चरणों में- सबको यहीं समझाया है...

5. आये जगत में भगत प्रकाश जीं- प्रकाश यह फैलाये हैं
देश-विदेश में जाकर सबको- गुरु कीं महिमा बताये है
नाम गुरु का सबको जपाते- जो हमने बिसराया है

6. टेऊँराम के दर पर बन्दे- जो श्रद्धा से आता है
अमृत नाम हरीं का पीकर- आवागमन मिटाता है
सारे जगत में पंथ यहीं बस- सबसे न्यारा न्यारा है...

-ओमप्रकाश मंगतराम दीपानी, कामठी

पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज संत मण्डली का

देशाटन यात्रा-दर्शन

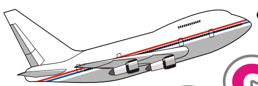

धर्मशाला 2 अगस्त से 8 सितम्बर

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष परम पूज्य गुरुवर सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज संत मण्डली द्वारा हिमाचल प्रदेश के रमणीक स्थल धर्मशाला शहर स्थित श्री प्रेम प्रकाश स्वर्गाश्रम में २ अगस्त से ८ सितम्बर तक निवास किया गया

पूज्य गुरु महाराज जी एकांतवास के मध्य १२ अगस्त को धार्मिक नगरी **अमृतसर** पहुँचे. यहाँ पर स्वर्ण मंदिर गुरुद्वारे के दर्शन करके रात्रि विश्राम अमृतसर में ही किया गया. भारत- पाक सीमा वाघा (अटारी) बार्डर भी देखने गये. पूज्य स्वामी मनोहरप्रकाशजी महाराज, गुरुमाता पूज्य कौशल्यादेवी, संत ढालूराम, संत कमललाल, सेवकगण श्री सांवलराम, श्री मोहन-पदमा शिवनानी, श्री जैसाराम भी गुरु महाराज जी की अमृतसर यात्रा में साथ रहे. १२ अगस्त रात्रि विश्राम अमृतसर में ही हुआ. १३ अगस्त को धर्मशाला पहुँचे.

२५ अगस्त को डलहौजी से ३५ किलोमीटर दूर पहाड़ों पर बने **भलेई माता मंदिर** भी पूज्य सद्गुरु महाराज जी संत मण्डली दर्शनार्थ पहुँचे. यहाँ पर व्यवस्थापकों ने पूज्य गुरु महाराज का आत्मीय स्वागत करते हुए अपार प्रसन्नता व्यक्त की. यहाँ पर गुरु महाराज जी द्वारा भण्डारा भी करवाया गया.

धर्मशाला निवास के समय समीपस्थ अनेक दर्शनीय स्थलों धार्मिक स्थानों के भी दर्शन किये गये. पूज्य स्वामी मनोहरलाल जी महाराज भी धर्मशाला में पूज्य गुरु महाराज जी के साथ रहे. पूज्य स्वामी जयदेवजी महाराज का भी कुछ समय धर्मशाला में गुरु महाराज जी के श्रीचरणों में निवास हुआ.

संत ढालूराम, संत कमललाल, श्री सांवलराम, श्री रामचन्द्र, श्री गणेशराम, विद्यार्थी किशोरलाल, श्री जयकिशन मोटवानी (जयपुर), श्री मोहन-पदमा शिवनानी (अजमेर), श्री जैसाराम (कोटा) एवं रायपुर की माता गीता देवी के साथ अन्य माताएँ भी सद्गुरु महाराज जी संतों की सेवा में रहे.

धर्मशाला में गुरुजनों के उत्सव भी सद्गुरु महाराज जी के सानिध्य में मनाये गये. इस अवसर पर विद्यालयों में भी बालक बालिकाओं को भण्डारा खिलाकर अनेक उपयोगी वस्तुएँ उपहार स्वरूप दी गईं. पूज्य सद्गुरु महाराज जी संत मण्डल द्वारा ६ सितम्बर को प्रातः हरिद्वार के लिए प्रस्थान किया गया.

सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज की पावन अध्यक्षता में

ब्यावर में श्री प्रेम प्रकाश आश्रम का वार्षिकोत्सव

रविवार 22 से गुरुवार 26 सितम्बर, 2019 तक

रविवार 22 सितम्बर	सोमवार 23 सितम्बर	मंगलवार 24 सितम्बर	बुधवार 25 सितम्बर	गुरुवार 26 सितम्बर
प्रातः 8 से 10 बजे तक श्रीमद्भगवद् गीता व श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ के पाठ आरम्भ सायं 5 से 8 बजे तक सत्संग-प्रवचन-आरती	प्रातः 8 से 10 बजे व सायं 5 से 8 बजे तक सत्संग-प्रवचन आरती	प्रातः 10 से दोपहर 12 बजे पूज्य सद्गुरु महाराज जी का आगमन, भव्यतम स्वागत हवन, सत्संग, ध्वजावंदन एवं आम भण्डारा सायं 5 से 8 बजे तक सत्संग-प्रवचन-आरती, सांस्कृतिक कार्यक्रम, आम भण्डारा	प्रातः 8 से 10 बजे सत्संग-आरती सायं 5 से 8 बजे तक सत्संग-प्रवचन-आरती आम भण्डारा	प्रातः 9 से 12 बजे व मूर्ति पूजन, सत्संग, पाठों का भोग एवं आम भण्डारा सायं 5 से 8 बजे तक सत्संग-प्रवचन-आरती एवं पल्लव पाकर महोत्सव की समाप्ति, आम भण्डारा

23 से 26 सितम्बर तक कार्यक्रम प्रातःकालीन आश्रम पर एवं सायंकालीन अशोक पैलेस, सेन्दड़ा रोड़ पर होंगे.

पता : स्वामी टेऊँराम, प्रेम प्रकाश आश्रम, नन्द नगर, गली नं. 2, ब्यावर (राजस्थान) फोन : 01462-258198

सेवा में: संत शम्भूलाल प्रेमप्रकाशी, श्री प्रेम प्रकाश सेवा मण्डली, ब्यावर, मोबाईल : 93351 14850

गौशाला सत्संग भवन, केकड़ी में 28 सितम्बर को सायं 5 से 7:30 बजे तक दिव्य सत्संग समारोह

शोक–समाचार

माता मूलीदेवी, माता शीला एवं श्री टोपणदास

केकड़ी। श्री प्रेम प्रकाश सेवा मण्डली के सक्रिय सेवकगण ६६ वर्षीय माता मूलीदेवी धर्मपत्नी अमरापुरवासी श्री कीमतराम बजाज (८ जून को), माता शीलादेवी धर्मपत्नी बलराज मेहरचंदानी, ६२ वर्ष की आयु में २३ जुलाई को एवं ७१ वर्षीय श्री टोपनदास धनवानी जी २ अगस्त को गुरुगोद में अमरापुर लोक सिधारे.

माता माधुरी गुरबानी

इन्दौर। श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, इन्दौर के प्रमुख सेवक दादा श्री लक्ष्मणलाल गुरबानी जी की ६२ वर्षीय धर्मपत्नी श्रीमती माधुरी गुरबानी जी १० अगस्त को अकस्मात् गुरुगोद में अमरापुर सिधारीं. माता माधुरी जी भी नियमित रूप से दरबार साहब में आकर सेवा सत्संग में भाग लेती थीं. आपका पूरा परिवार गुरु दरबार संतों की सेवा में सदा आगे रहता है.

डॉ. दीवानन्द ठाकुर

ग्वालियर। श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, ग्वालियर के प्रमुख सक्रिय सेवक डॉ. दीवानन्द ठाकुर जी ७२ वर्ष की आयु में १४ अगस्त को गुरु चरणाश्रय में अमरापुर लोक सिधारे. कैसा भी मौसम क्यों न हो, नियमित रूप से नियत समय पर दरबार के सत्संग सेवा में भाग लेना + गुरुजनों, संतजनों की सेवा में सदा अग्रणीय रहने के साथ परोपकारी कार्यों में भी आपकी भूमिका सदैव स्मरणीय रहेगी. १ मार्च १९४८ को कंधकोट (सिंध) में जन्मे डॉ. दीवानन्द ठाकुर के पिता अमरापुरवासी डॉ. भगवानदास जी भी गुरु महाराज जी के अनन्य सेवक रहे हैं.

श्री जयरामदास चैनानी

सिवनी। प्रेम प्रकाश आश्रम ट्रस्ट के सचिव (ट्रस्टी) श्री जयराम दास चैनानी जी ५९ वर्ष की आयु में १५ अगस्त को गुरु गोद में अमरापुर लोक सिधारे. आप अमरापुरवासी श्री मोतीराम चैनानी (पूर्व अध्यक्ष प्रेम प्रकाश सेवा मण्डली) के सुपुत्र थे. आप गुरु दरबार की सेवा का कार्य पूर्ण निष्ठाभाव से करते रहे.

श्री परमानन्द मोटवानी

उल्हासनगर। श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, उल्हासनगर-५ के प्रमुख सेवक श्री परमानन्द मोटवानी जी ७२ वर्ष की आयु में २१ अगस्त को गुरुगोद में अमरापुर सिधारे. गुरुभक्त मास्टर श्री तुलसीदास मोटवानी जी के सुपुत्र श्री परमानन्द जी ने उल्हासनगर आश्रम के बुक स्टॉल संभाल सेवा के अलावा मेलों के आमंत्रण-पत्रों को देश दुनिया के आश्रमों व प्रेमियों को भेजने की सेवा का समर्पण भाव से निर्वहन किया. आप प्रेम प्रकाश सन्देश मासिक पत्र के प्रचार-प्रसार सेवा में भी स्थापना समय से जुड़े रहे. गुरुदरबार संतों की सेवा में आपने अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया था.

भाई साहब श्री रामचन्द रामचंदानी

देवलाली। श्री सच्चखण्ड दरबार, मेन स्ट्रीट, देवलाली के भाई साहब श्री रामचन्द रामचंदानी जी, २७ अगस्त को गुरुचरणों में अमरापुर लोक सिधारे. २६ दिसम्बर १९४१ में ज्ञानी हरीराम रामचंदानी जी के यहाँ सेवण दादू सिंध में जन्म लेकर बालपन से ही गुरुघर की सेवा की. विभाजन के पश्चात् आपके पिता ने देवलाली में श्री सच्चखंड दरबार की स्थापना की. पिता के सच्चखंड पधारने के पश्चात् जीवनोत्सर्ग तक आपने गुरुघर की सेवा संभाल बड़े ही लगन के साथ की. आपने अपनी सुपुत्री रेणु का विवाह जयपुर निवासी अमरापुरवासी श्री टीकमदास प्रेमप्रकाशी जी के घर में उनके सुपुत्र जो अब अमरापुवासी हैं-श्री बोधराज के साथ किया.

श्री रमेशलाल किंगरानी

रायपुर। श्री रमेशलाल किंगरानी जी सुपुत्र अमरापुरवासी श्री आड़ूमल किंगरानी जी, ६९ वर्ष की आयु में ३ सितम्बर को गुरुगोद में अमरापुर सिधारे. आपने प्रेम प्रकाश आश्रम के कैशियर का उत्तरदायित्व भी सफलतापूर्वक संभाला. गुरु दरबार संतों की सेवा में आपका पूरा परिवार जुड़ा हुआ है.

श्री मोतीराम करनानी

जयपुर। श्री अमरापुर दरबार के सक्रिय सेवाधारी श्री मोतीराम करनानी जी ३ सितम्बर को ६० वर्ष की आयु में गुरु चरणाश्रय में अमरापुर सिधारे. ९-१२-१९५९ को अमरापुरवासी श्री केवलराम- माता ठाकुरीबाई के घर आँगन में जन्मे श्री मोतीराम जी जब तक स्वस्थ रहे- अमरापुर दरबार संतों की सेवा करते रहे. बाल्यावस्था में आपके माता-पिता ने आपको अमरापुर दरबार पर गुरुचरणों में समर्पित किया, अनेक सालों तक सेवा करने के उपरांत

युवावस्था में आपने घर लौटकर गृहस्थी बसायी.

श्री विश्नदास वल्लभानी

जलगाँव। श्री प्रेम प्रकाश आश्रम जलगाँव के ट्रस्टी श्री गोबिंदराम जी के ७५ वर्षीय भाई श्री विश्नदास वल्लभानी जी, ४ सितम्बर को गुरुगोद में अमरापुर लोक सिधारे. गुरुदरबार संतों की सेवा से आपका सदा लगाव रहा.

दादा श्री चाण्डूमल खेमानी जी

अहमदाबाद। गुरु दरबार के समर्पित निष्काम सेवाधारी प्रेमप्रकाशी दादा श्री चाण्डूमल खेमानी जी, ८५ वर्ष की आयु में ७-८ सितम्बर की मध्यरात्रि को गुरुलोक अमरापुर सिधारे. सक्खर सिंध में माता मोतीबाई पिता श्री लहरूमल के घर आँगन में जन्मे दादा श्री चाण्डूमल खेमानी जी द्वारा पिछले दस वर्षों से अहमदाबाद के प्रेम प्रकाश आश्रम में रहकर संतों द्वारा सौंपे गये अनेक सेवा कार्यों का आनन्दपूर्वक निर्वहन किया गया. इसके पूर्व आप हरिद्वार आश्रम पर भी कई वर्षों तक रहे, वहाँ पर संतों द्वारा सौंपे जाने वाले सेवा कार्यों को भी आपने बड़ी ही रुचि के साथ किया.

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज संत मण्डली द्वारा दिवंगत आत्माओं को अमरापुर लोक में अपनी चरण-शरण में रखने हेतु आचार्यश्री सद्गुरु देव स्वामी टेऊँराम जी महाराज व प्रभु परमात्मा से प्रार्थना की गई (पल्लव पाया).

सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज का 113वाँ जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया

मंगलमूर्ति आचार्यश्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज, महर्षि सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के उत्तराधिकारी श्री प्रेम प्रकाश पंथ के तृतीय पीठाधीश्वर प्रेमावतार सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज का ११३वाँ पावन जन्मोत्सव ११ अगस्त से १५ अगस्त तक देश दुनिया के समस्त प्रेम प्रकाश आश्रमों मंदिरों एवं अन्य अनेक स्थानों पर धूमधाम से मनाया गया. इस अवसर पर परम्परानुसार पंचदिवसीय श्रीमद्भगवद्गीता एवं श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ के पाठ रखे गये. उत्सव के पाँचों दिन पूज्य संत महापुरुषों भगतों विद्वानों ने प्रेमावतार सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज के सद्गुणों का रसपूर्ण बखान किया. इस अवसर पर समस्त आश्रमों को अनुपम रूप से सजाया गया था- अनेक शहरों में जनोपयोगी कार्य भी जन्मोत्सव के निमित्त किये गये.

हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला नगर में स्थापित प्रेम प्रकाश स्वर्ग आश्रम में परम पूज्य सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज की पवित्र सानिध्यता में अनेक कार्यक्रमों के अलावा विद्यालयों में जाकर बच्चों को भोजन भण्डारा खिलाया गया एवं उनको उपयोगी वस्तुएँ उपहार स्वरूप भेंट की गईं.

जन्मोत्सव के प्रमुख कार्यक्रम श्री अमरापुर स्थान, जयपुर एवं उल्हासनगर-५ में स्थित स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम में सम्पन्न हुए.

सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज एवं सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज का वर्सी उत्सव

प्रेममूर्ति सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज का २७वाँ वर्सी उत्सव १७ अगस्त को श्री अमरापुर दरबार + पूज्य महाराज जी की तपोभूमि उल्हासनगर सहित देश दुनिया के समस्त प्रेम प्रकाश आश्रमों में मनाया गया. पूज्य महाराजश्री की पावन स्मृतियों को संत महापुरुषों के श्रीमुख से सुनकर संगत पूज्य महाराजश्री की याद में भावविभोर हो उठी. सद्गुरु महाराज जी के अमृतवचनों का श्रवण भी किया गया.

मर्यादामूर्ति सद्गुरु स्वामी हरिदासरामजी महाराज का १६वाँ वर्सी उत्सव २३ से २७ अगस्त तक श्री अमरापुर स्थान, जयपुर के साथ समूचे विश्व के विभिन्न शहरों में स्थापित प्रेम प्रकाश आश्रमों पर मनाया गया. इस अवसर पर अन्य अनेक कार्यक्रमों के अतिरिक्त पूज्य महाराज जी की ज्ञानवाणी (आडियो/वीडियो कैसेटों के माध्यम से) का श्रवण करके सारी संगत के हृदय गुरुदेव की पावन स्मृति में सजल हो उठे.

धर्मशाला में पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज, पूज्य स्वामी मनोहरप्रकाशजी महाराज, पूज्य स्वामी जयदेवजी महाराज के पावन सानिध्य में गुरुजनों के वर्सी उत्सव मनाये गये. इस मौके पर धर्मशाला नगर के दूरस्थ क्षेत्रों में स्थित स्कूलों में जाकर छात्र-छात्राओं का भण्डारा किया गया एवं दक्षिणादि देकर बच्चों पर स्नेहपूर्वक मंगलाशीष की गई.

56 भक्तों ने किया रक्तदान

अहमदाबाद। स्वामी टेऊँराम नगर, कोतरपुर, अहमदाबाद में १ सितम्बर को आयोजित रक्तदान शिविर में ५६ प्रेमप्रकाशी भक्तों ने संत मोनूराम जी के सानिध्य में रक्तदान महादान करके अपने जीवन में पुण्यलाभ संचित किया.

महर्षि सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का 123वाँ जन्म महोत्सव

मंगलवार 8 से शनिवार 12 अक्टूबर, 2019 तक

श्री अमरापुर स्थान, जयपुर सहित
समस्त प्रेम प्रकाश आश्रमों में मनाया जायेगा.

(नोट : हरिद्वार मेला इस साल नहीं होगा.)

आध्यात्मिक वर्ग पहेली-184

1		2	3	4	ॐ	5	
	ॐ	6			7		ॐ
ॐ	8			ॐ	9		10
ॐ	11		ॐ	12		ॐ	
13		ॐ	14		ॐ	15	
16			ॐ	17			
	ॐ	ॐ	18		ॐ		ॐ
19				ॐ	20		

बाएँ से दाएँ : प्रस्तुति : सुधा जौहरी, जयपुर

01. श्रावण शुक्ल की पाँचवीं तिथि वाला पर्व जिस दिन सर्प की पूजा होती है. (2.3)
05. विष्णु का विशाल मछली के रूप में अवतार. (2), 06. चार मुख वाले ब्रह्मा. (5),
08. सुग्रीव, नल, नील आदि इसी वर्ग के थे. (3), 09. वन में उत्पन्न वनस्पति प्राणी आदि. (3)
11. मनुष्यों के काम, क्रोध आदि रिपुओं में से एक; घमण्ड; नशा; गर्व. (2)
12. श्रीकृष्ण की प्रिया. (2), 13. मंत्र, नाम आदि का निरन्तर बोलना. (2)
14. दुर्योधन शकुनी का .... था. (2)
15. कार्य; 'विद्यावान गुणी अति चातुर, राम ..... करने को आतुर. (2)
16. देव दानवों ने मिल कर सागर .... किया. (3), 17. शंकर भगवान का मन्दिर. (4)
18. यज्ञ में अर्पण की जाने वाली वस्तुएँ. (2), 19. भगवान गौतम बुद्ध का एक नाम. (4)
20. न्याय के लिये प्रसिद्ध राजा का छोटा नाम जिनकी कथाओं में बैताल भी था. (3)

ऊपर से नीचे :

01. राजा जनक लव कुश के .... थे. (2)
02. प्रदेश जिसमें पाँच सरिताएँ प्रवाहित होती हैं. (4), 03. कुशल; बुद्धिमान; चालाक. (3)
04. कृष्ण के भक्ति रस में डूबी संत जो रानी भी थी. (2)
05. किसी अच्छे विचार पर निरन्तर सोचना. (3), 07. नौ प्रकार की भक्ति. (3),
08. प्रचलित धार्मिक विचार धारा के विपरीत सोच की धारा. (4)
10. राजा जिन्होंने नाग यज्ञ किया. (4)
12. कुशीनगर के पुरुवंशी परोपकारी महादानी नृप जिनकी परीक्षा लेने बाज़ व कबूतर बन इन्द्र व अग्निदेव. (2.2) 13. राम की सेना में रीछ जो अत्यंत बुद्धिमान थे. (4)
15. समय का पहिया. (2.2), 18. युद्ध में मारे गए व्यक्ति. (2)

आध्यात्मिक वर्ग पहेली-183 का सही हल

1 अ	2 नं	3 त	वि	4 ज	5 य	ॐ	6 ग
7 न	दं	न	ॐ	8 य	म	रा	ज
ग	ॐ	9 य	म	ॐ	लो	ॐ	व
ॐ	10 गं	ॐ	ॐ	11 म	क	रं	द
12 गं	गा	13 सा	14 ग	र	ॐ	ॐ	न
ॐ	ॐ	15 व	रु	ण	16 दे	व	ॐ
17 मा	18 र	धा	ड़	ॐ	व	ॐ	19 ज्ञा
20 न	म	न	ॐ	21 व	र	दा	न

वर्गपहेली–183 के सही हल भेजने वालों के नाम– **जयपुर से** प्रेमप्रकाशी जतिन, सोनिया, सारिका, कविता, अशोक पुरसानी, **मुम्बई से** प्रेमप्रकाशी अशोक कुमार मोटवानी, **विजयवाड़ा से** प्रेमप्रकाशी गुलाबराय लालवानी, **गांधीधाम से** प्रेमप्रकाशी रमेश ताराचंद बूलचंदानी, भूमिका माखीजानी, जयंती एम. भगतानी, कान्ता सुरेश लालवानी, **मंदसौर से** प्रेमप्रकाशी मंजू लक्ष्मणदास होतवानी, **गोन्दिया से** प्रेमप्रकाशी प्रीती विजय पृथ्यानी, **इन्दौर से** प्रेमप्रकाशी प्रीती तलरेजा, कविता लोहानी, सानवी तलरेजा, **भानुप्रतापपुर से** प्रेमप्रकाशी मायादेवी, **विजयवाड़ा से** प्रेमप्रकाशी गुलाबराय लालवानी, **भाटापारा से** प्रेमप्रकाशी संगीता केसवानी, **जलगाँव से** प्रेमप्रकाशी महिमा आत्म चोटलानी, **जोधपुर से** प्रेमप्रकाशी भावना मनोहरलाल बादलानी, गीता परी धर्मानी, रेणु ममता खिमानी, दीपा कटारिया, माधुरी कृपलानी, कविता कलवानी, राधा सोनिया सखरानी, भगवती महानंदानी, **पलवल से** प्रेमप्रकाशी अशोक कुमार सरदाना, नितिन अरोड़ा, **दिल्ली से** प्रेमप्रकाशी वन्दना चन्दर लाडवानी, संध्या माखीजा, **नांगल मोजिया (राज.) से** प्रेमप्रकाशी गंगाराम राजवानी, **अहमदाबाद से** प्रेमप्रकाशी यशवन्त, रश्मि कलवानी, राधा के. गुरुदासानी, **दल्ली राजहरा से** प्रेमप्रकाशी गुरुमुखदास शहानी, सिमरन रविशंकर तलरेजा.

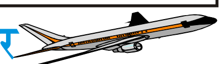

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर

सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज

का यात्रा कार्यक्रम

17 जुलाई से 20 सित. 2019 तक	**अनिर्णीत**	✆098290–14850
21 सित. से 23 सित. 2019 तक	**जयपुर**	✆0141–2372424, 2372423
24 सित. से 26 सित. 2019 तक	**ब्यावर** (वार्षिकोत्सव)	✆093351–14850
27 सित. से 28 सित. 2019 तक	**नसीराबाद, केकड़ी**	✆093351–14850
29 सित. से 30 सित. 2019 तक	**जयपुर**	✆0141–2372424, 2372423
01 से 14 अक्टूबर 2019 तक	**विदेश यात्रा**	✆098290–14850
15 से 16 अक्टूबर 2019 तक	**हिसार** (वार्षिकोत्सव)	✆01662–272049
17 से 20 अक्टूबर 2019 तक	**पलवल** (वार्षिकोत्सव)	✆01275–252826
21 से 22 अक्टूबर 2019 तक	**हथीन** (वार्षिकोत्सव)	✆099717–77638, 94166–36529
23 से 24 अक्टूबर 2019 तक	**पिनगवाँ** (वार्षिकोत्सव)	✆099910–91078
25 से 28 अक्टूबर 2019 तक	**जयपुर** (दीपावली)	✆0141–2372424, 2372423
29 अक्टूबर 2019	**यात्रा**	✆098290–14850
30 अक्टूबर से 1 नव. 2019 तक	**पूना** (वार्षिकोत्सव–कार्तिकोत्सव)	✆080555–27272
02 से 3 नवम्बर 2019 तक	**पिम्परी** (वार्षिकोत्सव–कार्तिकोत्सव)	✆020–27410487
04 से 6 नवम्बर 2019 तक	**जयपुर** (कार्तिकोत्सव–गोपाष्टमी)	✆0141–2372424, 2372423
07 से 8 नवम्बर 2019 तक	**सीकर** (कार्तिकोत्सव–वार्षिकोत्सव)	✆094142–88017
09 से 12 नवम्बर 2019 तक	**कोटा** (कार्तिकोत्सव–वार्षिकोत्सव)	✆094141–77781
13 नवम्बर 2019	**भवानीमण्डी** (वार्षिकोत्सव)	✆094141–77781
14 से 15 नवम्बर 2019 तक	**मंदसौर** (वार्षिकोत्सव)	✆094253–27651
16 से 17 नवम्बर 2019 तक	**भीलवाड़ा**	✆098292–84799
18 से 20 नवम्बर 2019 तक	**जयपुर**	✆0141–2372424, 2372423
21 से 25 नवम्बर 2019 तक	**दिल्ली** (स्वामी जयप्रकाश वार्षिकोत्सव)	✆098101–90467, 85279–21530
26 से 27 नवम्बर 2019 तक	**गया**	✆098290–14850
28 से 29 नवम्बर 2019 तक	**काशी वाराणसी** (वार्षिकोत्सव)	✆0542–2090412
30 नवम्बर 2019	**प्रयागराज**	✆070812–19000, 94528–92996
01 दिसम्बर से 2 दिस. 2019 तक	**फैजाबाद अयोध्या** (वार्षिकोत्सव)	✆091700–20295, 81032–31333
03 से 4 दिसम्बर 2019 तक	**लखनऊ** (वार्षिकोत्सव)	✆070812–19000, 94500–26893
05 से 7 दिसम्बर 2019 तक	**कानपुर** (वार्षिकोत्सव)	✆070812–19000

व्रत-पर्व-उत्सव

आश्विन कृष्ण पक्ष

16 सितम्बर 2019–सोमवार–पंचक समाप्त रात्रि में 3:33 बजे

17 सितम्बर 2019–मंगलवार–श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रि में 8:05 पर, कन्या संक्रांति

22 सितम्बर 2019–रविवार–महालक्ष्मी, सगड़ा छोड़ण

24 सितम्बर 2019–मंगलवार–एकादशी श्राद्ध

25 सितम्बर 2019–बुधवार–इंदिरा एकादशी व्रत

26 सितम्बर 2019–गुरुवार–प्रदोष व्रत

28 सितम्बर 2019–शनिवार–सर्वपितृ विसर्जन अमावस्या

आश्विन शुक्ल पक्ष

29 सितम्बर 2019–रविवार–नवरात्रा प्रारम्भ, घट स्थापना

30 सितम्बर 2019–सोमवार–चन्द्रदर्शन, असू चण्ड

02 अक्टूबर 2019–बुधवार–वैनायकी श्रीगणेशचतुर्थीव्रत, महात्मा गांधी एवं लालबहादुर शास्त्री जयंती

04 अक्टूबर 2019–शुक्रवार–सद्गुरु टेऊँराम चौथ

06 अक्टूबर 2019–रविवार–श्री दुर्गाष्टमी, महाष्टमी प्रत

07 अक्टूबर 2019–सोमवार–श्री दुर्गानवमी, जवारे विसर्जन

08 अक्टूबर 2019–मंगलवार–दशहरा, विजयादशमी, सद्गुरु सर्वानन्द जन्मोत्सव सभी आश्रमों पर शुरू

9 अक्टूबर 2019–बुधवार–पापांकुशा एकादशी व्रत,

9 अक्टूबर 2019–बुधवार–पंचकारम्भ दिन में 11:40 बजे से

12 अक्टूबर 2019–शनिवार–सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द अवतरण दिवस, समस्त आश्रमों पर जन्मोत्सव की सम्पन्नता

13 अक्टूबर 2019–रविवार–स्नान दान की पूर्णिमा, शरद पूर्णिमा, कार्तिक स्नानारम्भ

कार्तिक कृष्ण पक्ष

14 अक्टूबर 2019–सोमवार–पंचक समाप्त दिन में 10:49 बजे

17 अक्टूबर 2019–गुरुवार–श्रीगणेश चतुर्थी–करवाचौथ व्रत चन्द्रोदय रात 7:58 बजे

18 अक्टूबर 2019–शुक्रवार–तुला संक्रांति

21 अक्टूबर 2019–सोमवार–अहोई अष्टमीव्रत

24 अक्टूबर 2019–गुरुवार–रम्भा एकादशी व्रत

25 अक्टूबर 2019–शुक्रवार–प्रदोष व्रत, धनतेरस

26 अक्टूबर 2019–शनिवार–नरक (रूप) चौदस, छोटी दीवाली

27 अक्टूबर 2019–रविवार–दीपावली, दीपोत्सव, श्राद्ध की अमावस्या

28 अक्टूबर 2019–सोमवार–स्नान-दान की सोमवती अमावस, अन्नकूट, गोवर्धन पूजा

कार्तिक शुक्ल पक्ष

29 अक्टूबर 2019–मंगलवार–चन्द्रदर्शन, भाईदूज, कार्तिकोत्सव श्री अमरापुर दरबार सहित सभी आश्रमों पर शुरू

31 अक्टूबर 2019–गुरुवार–वैनायकी श्री गणेशचतुर्थीव्रत

जिज्ञासा (पृष्ठ 2 से जारी)- ज्यों ही यहाँ से गये, त्यों ही माया एक सुन्दर दिव्य अप्सरा का रूप धारण करके मुझे मोहित करने के लिए आ पहुँची. मैंने उसे देखकर सिर नीचे कर लिया और बड़े जोर से रोने लगा. इसके बाद क्या हुआ मुझे कुछ पता नहीं. अब आपके प्रेमपूर्वक पूछने पर समझा कि अब माया यहाँ से चली गई होगी और मैंने सिर ऊपर उठाया है.

उपरोक्त बातें सुनकर वैरागानन्द भी रोने लगा. यह देखकर विवेकानन्द आश्चर्य चकित हो गया और प्रेमपूर्वक उनसे पूछने लगा- भैया! अब आप तो बताओ कि तुम क्यों रो रहे हो? क्या आपको शहर में किसी ने सताया है या और कोई घटना घटी है, जिससे आप अचानक रो रहे हो? किन्तु विवेकानन्द ज्यों-ज्यों पूछता गया, त्यों-त्यों वैरागानन्द और जोर से रोने लगे. अन्त में बहुत पूछने पर वैरागानन्द ठण्डी निःश्वास लेकर कहने लगे- भैया! तुम्हें तो माया से छुटकारा पाने की युक्ति आ गयी और रोकर माया से छुटकारा पा लिया, किन्तु मैं सोच रहा हूँ कि यदि मुझे माया ठगने आ गयी तो मुझे ऐसी युक्ति नहीं आ सकेगी. विवेकानन्द बोला आप तो मुझसे भी बुद्धिमान् निकले जो माया के आने से पहले ही रोना शुरू कर दिया. आप धन्यवाद के पात्र हो, आप सरीखे लोगों के पास तो माया अपना मुँह भी नहीं दिखायेगी.

श्री गुरु महाराज जी ने प्रेमियों को उपरोक्त दृष्टांत सुनाकर यहाँ पर माया से जो वार्तालाप हुआ था, वह सबको बताया. सबको सावधान करते हुए कहने लगे कि आप सदैव माया से सचेत रहना.

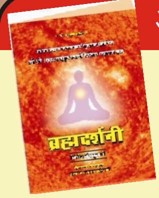

आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज द्वारा रचियलु

'ब्रह्मदर्शनी' सिंधीअ में समुझाणी

-प्रो. लछमण परसराम हर्दवाणी (पुणे)

पोएं अगस्त २०१६ अंक खां अगिते- ।। दशपदी-12 ।।

कदर न अवसर का है जांको, अपना कदर न रंचक ताँको।
अवसर का जो कदर पछाने, देव ताहिं कर सबको माने।
जो अवसर जिहँ भान्ति लगावे, अवसर तिहँ विधि ताहिं बनावे।
अवसर का है मरम महीना, जानत गुरुमुख को प्रवीना।
सत्गुरु हरि की जिस पर दाया, कह टेऊँ तिस सफल बनाया।।6 ।।

सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराजनि अगिते चवनि था, 'जंहिं माण्हूअ खे अवसर/मौक़े जो कोई क़दुरु नाहे, समुझो त अहिड़े माण्हूअ खे पंहिंजो तिरु बि क़दुरु नाहे. जेको मनुषु अवसर/मौके/समय जो क़दुरु करणु ज़ाणे थो, तंहिं खे सभई देवता करे मञिनि था. पंहिंजे अवसर जो जहिड़े नमूने उपयोगु कयो वञे थो, अवसरु उन खे तहिड़े नमूने बणाए थो. अवसर जो मरमु/मर्मु, भेदु सूक्षम आहे, जंहिं खे को प्रवीणु गुरमुखु ज़ाणी सघे थो. जंहिंते सत्गुरूअ ऐं परमेश्वर जी दया/कृपा थिए थी, उहो हर ग़ाल्हि में सफलु बणिजी वञे थो.'

जीवन में समय जो वडो महत्वु आहे. हिकु हिकु पलु/खिनु/घड़ी मनुष लाइ काराइती आहे. पंहिंजे समय/वक़्त जो सुठो उपयोगु करणु सभिनी जो कर्तव्यु आहे. छो त समय/वक़्तु गुज़िरी वियो त वापस कोन वरंदो आहे. अहिड़ीअ तरह मनुष खे जीवन में अनेक अवसर (मौक़ा) मिलनि था, जिनि जो सही उपयोगु करण सां सुखु, संतोषु, संपदा आदी मिली सघंदी आहे. तंहिंकरे मिलियल मौक़े जो लाभु पिराइणु घुरिजे. मौक़ो/अवसरु वरी वरी कोन मिलंदो आहे.

जीव खे मनुष जे रूप में जनमु मिलणु बि हिकु सुठे में सुठो अवसरु आहे. मनुष-देहि वरी वरी कान मिलंदी आहे. कंहिं सर्वोत्तम पुञ जे करे मनुष जी जूणि मिले थी. तंहिंकरे मनुष-रूप में अचण खां पोइ इन जनम जो सही सही उपयोगु करणु घुरिजे. इन सां ई जनमु सफलु थिए थो. परमेश्वर जो सुमिरनु-भजनु कंदे ऐं सभिनी प्राणियुनि जे हित/भलाईअ जा कम कंदे जीवनु गुज़ारण सां इन अवसर जो लाभु प्रापति थिए थो. हीउ मानुख-चोलो परोपकार ऐं प्रभूअ जे भक्तीअ सां सजायो थी सघे थो.

(हलदंडु)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक : श्रीचन्द पंजवानी द्वारा मुद्रक : सुनील पंजवानी, सन्नी प्रिन्टर्स, मामा का बाजार, लश्कर, ग्वालियर से मुद्रित करवाकर, कार्यालय : प्रेम प्रकाश सन्देश, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ, लश्कर, ग्वालियर-474 001 18 से प्रकाशित किया गया।
(कार्यालय फोन 0751-4045144 पर सम्पर्क समय प्रातः 8 से 10 व सांय 4 से 7 बजे तक)
सम्पादक : शंकरलाल सबनानी प्रबन्ध सम्पादक : श्रीचन्द पंजवानी

RNI MPHIN/2008/25627
डाक रजि. ग्वालियर सम्भाग- 161/2017-19
(R.M.S. Posting date Every Month 15th)

सूचना

समस्त सम्माननीय सदस्यों के सूचनार्थ उनके प्रेषण पते के ऊपर सदस्यता क्रमांक रसीद संख्या व शुल्क अवधि लिखी हुई है, शुल्क अवधि समाप्त होने की सूचना को आपके पते के ऊपर **LAST COPY** लिखकर उसे **BOLD** करके दर्शाया गया है. पत्रिका की निरंतर प्राप्ति के लिये अपनी सदस्यता का नवीनीकरण सदस्यों को यथाशीघ्र करा लेना चाहिए. – व्यवस्थापक

टीवी चैनलों पर
सद्गुरु महाराज जी के दिव्य सत्संग-दर्शन का लाभ लें
प्रति रविवार
ईश्वर टीवी चैनल
सुबह 6.00 से 6.30 बजे तक
संस्कार टीवी चैनल
अब बदले समय पर सायं 7 से 7:20 तक